ॐ श्री ...

॥ ॐ ॥

॥ सत्य बोलने से जय ॥

श्री बद्री-केदार यात्रा।

(मय यमनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ और सत्यपथ यात्रा मार्ग वर्णन)

प्रकाशक—

बाबा मनीरामजी, कालीकमली वाले

मुन्तजिम, क्षेत्र बाबा जी महाराज

काली कमली वाले रामनाथ जी

सदर दफ्तर, ऋषिकेश।

तेरहवीं बार २००० प्रति } सन् १९३५ ई० { बिना मूल्य वितरण।

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस बम्बईमें छपा।

श्रीबद्री-केदार यात्रा ।

विषय सूची ।

* ॐ *

॥ सत्य बोलने से जय ॥

* ॐ *

भूमिका।

यों तो हिन्दुओं में ही नहीं वरन् संसारभर की सभी प्रसिद्ध जातियों में तीर्थयात्रा की प्रथा है, परन्तु अन्य जातियों के सभी तीर्थ किसी न किसी विशेष घटना के स्मारक हैं; एवं हिन्दू जातिके अन्य तीर्थ भी प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ २ कुछ घटनाओंको भी सूचित करानेवाले हैं किन्तु उत्तराखण्ड में "वद्रिकाश्रम" भारत-वर्ष के चार धामों में से एक परम पुनीत, प्राकृतिक धाम है। यह धाम भारतवर्ष का ही नहीं, वरन् सारे भूलोक का शिरमौर है। यह स्थान दिव्य--प्राकृतिक सौन्दर्यमय, वैज्ञानिक तत्त्वमय, सर्व गुण सम्पन्न होनेसे अनादि काल से ही स्वाभाविक तपोभूमि है। प्राचीन ऋषि महर्षि तथा पुराणाचार्यों ने तो इसे साक्षात् भूवैकुण्ठ ही गाया है।

यह पवित्र भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि, महर्षि, साधु, महात्मा, देव, देवाङ्गनाओं से सेवित रही है। यहांके शुभ्र हिमालय की ऊँची ऊँची चोटियों से गिरते हुए मनोहर झरने, हरी हरी (आषाढ और भाद्रपद की) घास पर खिले हुए रंग विरंग के पुष्पोंकी सुन्दर शोभा, शुद्ध जल वायु, दिव्य कन्दराएँ आदि सभी दर्शनीय और मनोरञ्जक हैं।

एक वार आप इनको देखने का दृढ़ संकल्पमात्र कीजिये फिर निश्चय है कि श्रीबद्रीविशाल जी की कृपा दृष्टि से एक दिन आपको इस धाम के दर्शनोंका सौभाग्य अवश्यमेव प्राप्त हो जायगा।

वैकुण्ठ--निवासी श्री १०८ बाबा काली कमलीवाले जब सं० १९४१ में उत्तराखण्ड की यात्रा को पधारे थे उस समय श्री बद्रीनाथ, गङ्गोत्री, यमनोत्री के रास्ते का यह हाल था कि बहुत खर्च करनेवाले यात्री को भी ठहरने के लिये जगह और भोजन के लिये अन्न नहीं मिलता था। अभ्यागतों की अवस्था का तो कहना ही क्या है, इस कारण इस यात्रा का फल बहुत कम लोग उठा सकते थे।

इस कष्ट की निवृत्ति के लिये वैकुण्ठनिवासी बाबा काली कमली-वाले महाराज ने ऋषिकेश में बैठ कर धर्मात्मा पुरुषों को इस मार्ग में जगह २ धर्मशाला, सदावर्त आदि खुलवाने का उपदेश किया ताकि यात्री और अभ्यागतों को आराम मिले और धर्मात्मा पुरुषों का धन भी शुभ कार्य में खर्च हो। जिस समय संवत् १९५३ में बाबा काली कमली वाले महाराज का वैकुण्ठवास हुआ, उस समय आप के सामने यात्रा लाइन में सिर्फ ९ ही स्थानों पर सदावर्त था, कोष भी मामूली ही था और क्षेत्र का काम भी एक छोटे से रूप में था।

उन के बाद बाबा रामनाथ जी ने, जो कि वैकुण्ठवासी बाबा जी के सामने भी क्षेत्र का कार्य–सम्पादन करते रहते थे, कार्यभार सम्भाला और ईश्वर की कृपा, बाबा जी की आत्मिक शक्ति के बल तथा सज्जन श्रीमानों की सहायता से उन्हों ने क्षेत्र के कार्य और कोष को विशाल रूप से बढ़ाते हुए क्षेत्र को एक स्थाई, लोकप्रिय दातव्य संस्था के रूप में परिणित कर दिया।

आपने यात्रा लाइन में दुकानदारों को पेशगी रुपया देकर दुकानें खुलवाईं और अपने पुरुषार्थ से ४८ सदावर्त और खुलवाये। आज बाबाजी के क्षेत्र के अधीन कुल ५७ सदावर्त, १२ औषधालय, ६५ धर्मशाला, ४२ प्याऊ, ५ गौशाला, ३ पाठशाला तथा एक आयुर्वैदिक कालेज, एक आयुर्वैदिक औषध-निर्माणशाला और सेवा-समिति हैं।

संवत् १९८२ फाल्गुन वदी ३ को बाबा रामनाथजी का भी स्वर्गवास होगया। तब से बाबा मनीराम जी धर्मात्मा सज्जन श्रीमानों की मदद से और बाबा जी की तथा महात्माओं की कृपा से क्षेत्र का प्रबन्ध यथोचित रीति से करते चले आ रहे हैं।

यदि किसी यात्री का विचार मार्ग में कहीं धर्मशाला बनवाने

तथा प्याऊ, औषधालय या मुट्ठी भर अन्न के सदावर्त लगाने का हो तो वह नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें या सन्मुख होकर अपना विचार प्रकट करें।

पताः—श्री १०८ बाबा काली कमलीवाले,

रामनाथ जी,

मु० पो० ऋषीकेश, जि० देहरादून, यू०पी०

निवेदकः—

बाबा मनीराम, काली कमलीवाले,

मुन्तजीम, क्षेत्र, महाराज का०क० वाले,

सदर दफ्तर ऋषीकेश।

श्री बद्री-केदार यात्रा ।

यह मार्ग अब उतना कठिन नहीं है जितना कि यह ५० वर्ष पहिले था। अब सरकारने इस मार्गमें पुलिस, तारघर, डाकघर, अस्पताल, गस्ती, शफाखाने, सड़कें और इनस्पेक्शन बँगले बनवा दिये हैं और बीमारी सफाई तथा दूकानों के निरीक्षण के लिये यात्रा काल में हेल्थ औफीसर और सेनेटरी इन्स्पेक्टरों को भी नियुक्त कर देती है।

सारे मार्ग में दो २ तीन ३ मील के फास्ले पर साफ सुथरी चट्टियां बनिया लोगों की बनाई रहती हैं किन्तु ध्यान रहे कि इन का ध्येय प्रायः यही रहता है कि जो यात्री इनसे सामान खरीदते हैं उन्हीं की सेवा सुश्रूषा विशेषतर किया करते हैं।

मार्ग में १०-१० मील के फ़ासले पर इन्स्पेक्शन बंगले बने हुए हैं। जिनकी उनमें टिकने की इच्छा हो उनको डिस्ट्रिक्ट इञ्जिनियर, पौड़ी, गढ़वाल, और रियासतवाले बंगलोंके लिये टिहरी दरबार से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

आज कल टिहरी दरबार की ओर से देवप्रयाग तक मोटर की सड़क बनाने का काम जारी है और आशा है कि एक दो साल के अन्दर काम पूरा हो जायगा। तब तो यात्रीगण बड़े आराम के साथ देवप्रयाग तक पहुँच सकते हैं और वहां से यमनोत्री, गङ्गोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा कर फिर सीधे देवप्रयाग लौट कर मोटर से सीधे ऋषीकेश वापिस आ सकते हैं।

बाबा जी के क्षेत्रकी ओर से सारे मार्ग में ख़ास २ स्थानों पर धर्मशाला, प्याऊ, औषधालय व साधु महात्माओं के लिये अन्नक्षेत्र खुले हुए हैं। जिन में यात्री, सज्जन श्रीमान् सभी को आराम मिलता है।

यात्रा करते समय ध्यान रखने योग्य बातें ।

संयमः—हिंसा नहीं करना, सच बोलना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य से रहना, दान नहीं लेना, किसी का अन्न नहीं खाना, चारपाई पर या किसी दूसरे के बिस्तरे पर न सोना, जहां तक बन पड़े भोजन अपने हाथसे बनाकर एक भुक्त करना, ऐसे पदार्थ जो रजोगुण और तमोगुण वर्धक हों (अथवा जो धार्मिक दृष्टि से वर्जित हों) उनको न खाना, तीर्थ पर पहुँच कर पहिली रात्रि को उपवास करना, प्रत्येक तीर्थ पर पहुँच कर जब तक तीर्थ-कृत्य न निभ जाय तब तक भोजन नहीं करना, इत्यादि।

नियमः—पवित्रतापूर्वक रहना, नित्य शान्त चित्तसे सन्तोष-पूर्वक रहना, कुछ ईश्वर भजन, पाठ पूजा या जप करते रहना। ईश्वर वा ईश्वर की कल्पित (मानी हुई) मूर्ति में दृढ़ विश्वास तथा पूर्ण श्रद्धा रखना। बड़े प्रातःकाल उठकर शौचादिक क्रिया से निवृत्त होकर सन्ध्योपासनादि कर्म कर पाठ पूजा करना, यदि तीर्थ हो तो 'तीर्थ कर्म' करे, न हो तो कुछ खा पी कर चल दें विना खाये चलना सर्वथा हानिकारक है क्योंकि विना खाये चलने से पानी बहुत पिया जाता है जिससे कि हाज्मे में बहुत कमज़ोरी आ जाती है।

तीर्थ कर्मः—नित्य नैमित्तिक कर्म करने के उपरान्त किसी सत्पात्र तीर्थपुरोहित द्वारा (यदि किसी को कराना हो तो) पिंड-दान तथा तर्पण श्राद्ध करा कर गौ ब्राह्मण छात्र, साधु महात्माओं को भोजन करावे। उनकी यथाशक्ति, यथाविधि, यथायोग्य सेवा सुश्रूषा, दर्शनस्पर्शन पूजा सन्मान कर उन से आशीर्वाद लेवे। सब को सन्तोषित रक्खे किसी को अप्रिय शब्द न कहे. क्योंकि तुलसीदास जी भी कह गये हैं किः—

तुलसी या संसार में, सबसे मिलिये धाय।
को जाने को रूप में, नारायण मिल जाय॥
प्रातहि उठिके नित्य नित, करिये प्रभुको ध्यान।
जाते जगमें होय सुख, अरु उपजे सतज्ञान॥

१—प्रातःकाल उठकर परमात्मा का चिंतवन करना चाहिये जिससे दिन के सम्पूर्ण कार्य्य निर्विघ्नता पूर्वक हो सकें।

२—क़ब्जः—यात्रा में बासी भोजन नहीं करना चाहिये इससे कब्ज होती है।

३—गङ्गाजलः—चलते चलते गङ्गाजल एकदम नहीं पीना चाहिये, दस मिनट ठहरकर तथा गङ्गाजलको भी ठहरा कर पीना चाहिये ताकि पसीना सूख जाय और गङ्गाजल की रेत भी पात्र में नीचे बैठ जाय।

४—जेबकटे, चोर और गुण्डों से बचो, वे देश से ही यात्रियों के साथ हो लेते हैं।

५-भोजनः—हल्का, सादा और गरम २ करना चाहिये।

६-फलः—कच्चे तथा अधिक पके हुए नहीं खाने चाहिये।

७-कपड़ाः—ओढ़ने बिछाने तथा पहिरने के लिए पूरे गर्मवस्त्र साथ में ले जाने चाहियें।

८-जूताः—हल्का और मज़बूत होना चाहिये।

९-स्नानः—सुबह को या स्थान पर पहुँच कुछ देर ठहर कर करना चाहिये।

१०-जलपीनाः—चलते चलते जल अधिक नहीं पीना चाहिये।

११-कलेवाः—सुबह को कुछ खा पीकर चलने से शरीर में बल रहता है और पानी पीने से नुकसान नहीं पहुँचता।

१२-मक्खियांः—केदारनाथ की तर्फ एक प्रकार की जहरीली मक्खी होती है जिसके काटने से पहिले खुजली फिर शरीर की प्रकृति के अनुसार फोड़े तथा घाव भी हो जाते हैं। इसकी दवा यही है कि उस स्थानपर टिश्चर, अमृतधारा निर्विषी बिषलगडा और ज़हरमोरा आदि में से कोई एक दवा को जब तक अच्छा न हो लगाते रहिये। इनमें से बहुतसी चीजें वहीं मिल जाती हैं।

१३-दुकानदारों को न आप मैले बर्तन दो न उन से मैले बर्तन लो।

१४-'पथ्याशी कल्पतां सुखमरोगी'। अर्थात पथ्य से रहनेवाला सदा सुखपूर्वक और निरोग रहता है।

७–कपड़ाः–ओढ़ने बिछाने तथा पहिरने के लिए पूरे गर्मवस्त्र साथ में ले जाने चाहियें। श्री बाबा जी महाराज के क्षेत्र की ओर से भी अपनी धर्मशालाओं में टिकनेवाले यात्रियों को ओढ़ने बिछाने का कपड़ा बद्रीनाथ लाईन म पाण्डुकेश्वर तथा पुरी बद्रीनाथ में मिलता है और केदारनाथ लाईन में गुप्तकाशी से १२ मील आगे रामपुर चट्टी में पुरी केदारनाथ तक के लिये मिलता है जो कि वापसी में यहीं पर वापिस द देना चाहिये और पुरी केदारनाथ में भी अपनी धर्मशाला में टिकनेवाले यात्रियों को भी कपड़ा दिया जाता है।

८–जूताः–हलका और मज़बूत होना चाहिये।

९–स्नानः–सुबह को या स्थान पर पहुँच कुछ देर ठहर कर करना चाहिये।

१०–मक्खियांः–केदारनाथ की तर्फ एक प्रकार की जहरीली मक्खी होती हैं जिनके काटनेसे पहिले खुजली फिर शरीर की प्रकृति के अनुसार फोड़े तथा घाव भी हो जाते हैं।

११–यात्रियों को चाहिये कि वे दुकानदार तथा धर्मशाला-वालों से साफ बर्तन लें और साफ करके दें।

१२–बीमार कौन होते हैं?—जोकि खाने पीने की परवाह न करके बहुत चलते हैं, या बासी गरिष्ठ और दुकान की पकी हुई चीजें खाते हैं, या गुड़, चना, सत्तुआ आदि खाकर चलते हैं, या जो ठण्ड में भी ठण्डे जलसे अधिक देर तक स्नान करते हैं और देर तक उघाड़े (नंगे) रहते हैं अथवा जो ऊपर बताये हुए नियमों का उल्लङ्घन करते हैं।

१३—परिणामः—उक्त सिद्धान्तों पर ध्यान न देने से निम्न लिखित बीमारियां के होने की सम्भावना है—साधारण तथा

खूनी पेचिश, आंव, पेट दर्द, विशूचिका, बुखार शिर दर्द आदि।

१४—खर्चः—यों तो अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक आदमी का खाने पीने का अलग २ ढंग होता है, कोई आला सा आला भोजन करता है तो कोई बहुत मामूली। किन्तु आम तौर पर साधारण भोजन का खर्चा इस यात्रा में प्रत्येक आदमी के लिये रोज़ाना ॥=) से ॥।) तक लगता है। कुली आम तौरपर १) से सवा रुपया तक रोज़के हिसाब से लेते हैं किन्तु यात्राकी कमीवेशीके अनुसार कम और वेशी भी ले लेते हैं। कुलियों को मज़दूरी के अलावा दो पैसा रोज चना चबेना के लिये दिया जाता है। और हरएक तीर्थ पर खिचड़ी खाने के लिये देनी पड़ती है। एवं जिस दिन यात्री अपनी इच्छा से तथा किसी कारण मुकाम करेगा उस दिन का खाना भी कुली का यात्री को ही देना पड़ता है। और यदि दो तीन दिनसे वेशी, शर्त के अलावा, कहीं रुकना पड़े तो उतने दिनों की वेशी मजदूरी भी यात्री को देनी पड़ती है। पहाड़ी घोड़े का भाड़ा २) रोज़ के हिसावसे पड़ता है किन्तु कोशिश करने पर भी आमतौर पर मिलता नहीं। कण्डी, झम्पान तो कुलियों के अपने ही रहते हैं परन्तु डण्डी की सवारी वालों को डंडी की कीमत अलग देनी पड़ती है या यात्री को स्वयं खरीद करनी पड़ती है।

कंड़ी को एक कुली ले जाता है परन्तु यात्री को कष्ट बहुत होता है झम्पान तथा डंडी को चार कुली ले जाते हैं। झम्पान से डंडी में आराम रहता है। और चार के बजाय ५ कुली कर चलना चाहिये रास्ते में आराम रहता है। और जल्दी चला जाता है।

१५—डांडी का भाड़ा ऋषिकेश से केदार होकर वापिस मेलचौंरी या श्रीनगर तक १२५) रु० से लेकर १७५) रु० तक होता है। मेलचौंरी या श्रीनगर से आगे रामनगर या ऋषिकेश तकके

लिये दूसरे कुली करने पड़ते हैं यह बकाया खफर (दोनों तर्फ का बराबर) ३–४ दिन का है। पञ्चकेदार याने यमनोत्री गङ्गोत्री केदार और बद्रीनाथ होकर वापिस मेलचौंरी व श्रीनगर तक २००) रु० के करीब पड़ता है।

१६–सामानः–खाने पीने का सामान साथ में ले जानेकी कोई जरूरत नहीं, क्योंकि सभी चट्टियों पर दुकानें रहती हैं जहां कि सब प्रकार की सामग्री मिल सकती है। सिर्फ मेवा, मिश्री, इलायची, चटनी का सामान–इमली, अनारदाना आदि अवश्य साथ में ले जाना चाहिये। ओढ़ने बिछाने के लिये दो कम्बल; लोई और दो चादर काफ़ी हैं, यमनोत्री, गङ्गोत्री, केदार और बद्रीनाथ आदि ऊँचे स्थानोंके सिवाय बाकी सारा रास्ता गरम ही है। पहिरने के लिये भी दो तीन सूट ठंडे गरम कपड़े की ले जानी चाहिये। ताकि वर्षा व धूप के समय यथोचित इस्तेमाल में आ सकें। छाता, बरसाती लट्ठ (चढ़ाई उतार पर चलते समय मदद् देनेके लिये) और भोजन बनाने के लिये मामूली बर्तन और एक लालटेन साथ ले जाने से जहां चाहे वहां टिक सकता है।

१७–किन्तु ग़रीब यात्री मामूली वस्त्रोंके साथ केवल २५) रु० में ही बद्री–केदार यात्रा कर आ सकता है।

१८–भावः–यात्राकी कमीवेशी के हिसाबसे चट्टियोंके दुकान-द़ार मनमाना भाव कर लेते हैं। सुबह को कुछ भाव है तो शामको कुछ है इसलिये निश्चितरूप से कुछ नहीं लिखा जा सकता। आमतौर पर घी, अरहर तथा मूंग की दाल और बढ़िया चावल कुछ महँगे बिकते हैं, क्योंकि बद्रीनाथ आदि स्थानों में माल २०) मन भाड़ा के हिसाब से पहुँचता है।

१९-सवारी--"मुनीकीरेती" (हृषीकेश) से सब प्रकार की सवारीका प्रवन्ध होता है। यहां पर यात्रियों के आराम के लिए सरकार ने टिहरी दरबार की अध्यक्षतामें कुली एजेन्सी नियुक्त कर रक्खी है जिसमें कि कुलियों को पहिचाननेवाले टण्डैल रहते हैं और कुलियोंकी रजिस्टरी भी की जाती है।

नोट-स्वयं किसी कुली का प्रबन्ध नहीं करना चाहिये। और एक कुली को ३० सेर से ज्यादा बोझ नहीं देना चाहिये। क्योंकि पीछे मार्ग में दुःख देते हैं।

प्रतिदिन १०—१५ मील से अधिक नहीं चलना चाहिये। १० बजेसे पहिले २ और शाम को ३ बजेके बाद चलना चाहिये।

पट खुलने का समय।

श्रीबद्रीनाथ जी के पट अक्षयतीज को नहीं खुलते हैं-किन्तु सदा वैशाख २५ प्रविष्ठासे ३० प्रविष्ठा के अन्दर २ ही खुला करते हैं। अर्थात् १५ मई के दो चार दिन आगे पीछे खुलते हैं।

श्रीकेदारनाथ जी के पट वैशाख १८ प्रविष्ठा से २५ प्रविष्ठा के अन्दर २ खुला करते हैं। एवम् यमनोत्री गङ्गोत्री के पट भी वैशाख १५ प्रविष्ठा से पहिले खुल जाते हैं।

ऋषीकेश से श्रीबद्रीनाथजी की यात्रा को जाने का उचित समय।

(क)—यमनोत्री, गङ्गोत्री और केदारनाथ होकर जाने के लिये वैशाख शुरू से आषाढ़ आखीर तक है।

(ख)—सिर्फ केदारनाथ होकर बद्रीनाथ जाने के लिये वैशाख आरम्भ से श्रावण आख़ीर तक है।

(ग)-सीधे बद्रीनाथ जानेके लिये वैशाख १० प्रविष्ठा से जन्माष्टमी तक है।

इस समय जाने से यात्रियों को रास्ते में कहीं भी बर्फ़ नहीं मिलेगा। किन्तु ध्यान रहे कि ज्येष्ठ और आषाढ़ में जाना सब से अच्छा है।

भिन्न २ स्थानों की दूरी।

ऋषीकेश	से सीधे	बद्रीनाथ	(देवप्रयाग होकर)	१६८ मील है।
"	"	केदारनाथ	"	१३४ "
"	"	गङ्गोत्री	"	१७८ "
"	"	यमनोत्री	"	१५१ "
यमनोत्री	से	गङ्गोत्री	"	९८॥ "
गङ्गोत्री	से	केदारनाथ	"	१२० "
केदारनाथ	से	बद्रीनाथ	"	१०१ "
बद्रीनाथ	से	वापिस रामनगर रेल्वे स्टेशन		१६४ "

सारी यात्रा।

सारी पैदल यात्रा ऋषीकेश से यमनोत्री, गङ्गोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ होकर वापिस ऋषिकेश तक ६५५ मील है।

केवल केदारनाथ और बद्रीनाथ होकर वापिस
ऋषिकेश तक... ... ... ४०२ "
सीधे बद्रीनाथ और वापिस ऋषिकेश तक ३३६ "

इसमें प्रति दिन १०-१५ मील के हिसाब से तथा अपनी शक्ति के अनुसार जाने से स्वयं अनुमान किया जा सकता है कि आप कितने दिनों में इस मार्गको तय कर सकेंगे।

* ॐ *

॥ सत्य बोलने से जय ।

श्रीबद्री-केदार यात्रा ।

श्री बद्रीनाथजी की स्तुति ।

पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम् ।
निकट गङ्गा बहत निर्मल, श्रीबदरिनाथ विश्वम्भरम् ॥
शेष सुमिरन करत निशिदिन, धरत ध्यान महेश्वरम् ।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्रीबदरिनाथ विश्वम्भरम् ॥
शक्ति-गौरि गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम् ।
योग ध्यानि अपार लीला, श्रीबदरिनाथ विश्वम्भरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनिजन करत जय २, श्रीबदरिनाथ विश्वम्भरम् ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम् ।
श्रीलक्ष्मी कमला चँवर डोले, श्रीबदरिनाथ विश्वम्भरम् ॥

बदरी-बदरीत्येव विशालेत्यपि यो वदेत् ।
तस्य विघ्ना विनश्यन्ति सफलास्तु मनोरथाः ॥

श्रीबद्रीश पंचायतन
लक्ष्मीजी
कुबेरजी
गणेश
नारायण
नर
गरुड़

॥ ॐ ॥

॥ सत्य बोलने से जय ॥

॥ श्री बदरीशो विजयतेतराम् ॥

श्री बद्री-केदार यात्रा ।

—⊸o⊷—

हरद्वार के नाम—गङ्गाद्वार, हरीद्वार, मायाक्षेत्र, स्वर्गद्वार भी है। जिस का विस्तार ज्वापुर से हृषीकेश तक है।

यहां से उत्तराखण्ड को यात्रा आरम्भ होती है। मायाक्षेत्र, केदारखण्ड, बद्रिकाश्रम आदि का विशेष परिचय तथा माहात्म्यः—

गङ्गाद्वारोत्तरं विप्र स्वर्गभूमिः स्मृता बुधैः ।
अन्यत्र पृथिवी प्रोक्ता गङ्गाद्वारोत्तरं विना ॥

हरिद्वार से उत्तर की ओर की भूमि को विद्वानों ने स्वर्ग (भूवैकुण्ठ) कहा है, गङ्गाद्वार के उत्तरकी भूमि के अतिरिक्त भूमि पृथ्वी कहलाती है। (केदारखण्ड अध्याय १०६ श्लोक ४)

इदमेव महाभाग स्वर्गद्वारं स्मृतं बुधैः ॥ ६ ॥

इसी स्थानको बुद्धिमान् महात्माओं ने स्वर्गद्वार भी कहा है।

त्रिषु स्थानेषु ये मर्त्या निवसन्ति महामुने ।
गङ्गाद्वारे तथा काश्यां गङ्गासागरसंगमे ।
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥१२॥

हे महामुने ! हरिद्वार, काशी और उत्तम गङ्गासागर-संगम इन तीन स्थानोंमें जो व्यक्ति निवास करते हैं सैकड़ों क्रोड़ कल्प में भी फिर उनका पुनरावर्तन नहीं होता है। (के० अ० १०)

धन्यानां पुरुषाणां हि गङ्गाद्वारस्य दर्शनम् ।
विशेषतस्तु मेषार्क-संक्रमेऽतीव पुण्यदम् ॥१३॥

जिन पुरुषों के अहोभाग्य हैं उन्हीं को हरिद्वार तीर्थके दर्शन होते हैं और अतिशय पुण्यदायक मेष की संक्रांति में तो बड़भागियों को ही इसके दर्शन मिलते हैं ॥ १३ ॥

तत्रापि कुम्भराशिस्थे वाक्पतौ सुरवन्दिते ।
अयने विषुवे चैव संक्रान्तौ चन्द्रसूर्ययोः॥१४॥
ग्रहणे वा व्यतीपाते पूर्णिमायां महामुने !
सोमवारान्वितायां वा यस्यांकस्यामथापिवा १५
अमायां च तथा माघे वैशाखे कार्तिकेऽपिवा ।
तिस्रः कोटचोऽर्द्धकोटी च तीर्थानां मुनिसत्तम ॥
भजंते सन्निधिं तत्र स्नातः सर्वत्र जायते ॥१६॥

जब बृहस्पति मेष की संक्रांति में कुम्भ राशि पर हों तो, मकर और कर्क की संक्रांति में, चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण में, व्यतीपात और पूर्णिमा में, सोमवती अमावास्या को अथवा अन्य अमावास्या में, माघ, वैशाख और कार्तिक में, हे मुनीश्वर ! साढ़े तीन क्रोड़ तीर्थ हरिद्वार में निवास करते हैं। अतएव उक्त काल में

हरिद्वार में स्नान करने से सभी तीर्थों में स्नान करने का फल उपलब्ध होता है ॥ १४, १५, १६ ॥

ततोऽपि क्रोशमात्रे हि वीरभद्रतपःस्थलम् ।
लक्षवर्षसहस्राणि तताप परमं तपः ॥ ८ ॥
गणेश्वरं महादेवो वीरभद्राय संददौ ।

गङ्गाद्वार के उत्तर एक कोश की दूरी पर वीरभद्र के तप का स्थान है। उस स्थान में वीरभद्र ने लक्ष सहस्रवर्ष पर्यन्त उग्रतपश्चर्या की थी, तब महादेवजीने वीरभद्र को अपने सब गणों का अधीश्वर बनाया था। (के० अ० १०८ श्लो० ८)

वीरभद्रेश्वराद्देवात पश्चिमे योजनार्द्धके ।
शालिहोत्रेश्वरो देवो महादेवो वरप्रदः॥ ३९ ॥

वीरभद्रेश्वर महादेव से पश्चिम की ओर आधा कोश की दूरी पर वरप्रदान करनेवाले शालिहोत्रेश्वर नाम के महादेव जी विद्यमान हैं ॥ ३९ ॥ (के० अ० १६५)

शालिहोत्रो मुनिर्यत्र शिवसन्न्यस्तमानसः ।
बभूव नियताहारस्तथा वर्षसहस्रकम् ॥ ४० ॥

वहां ही शालिहोत्र महादेव जी के विषय में दत्तचित्त हो सहस्रवर्ष पर्यन्त नियमित भोजन कर के उपस्थित रहते थे ॥ ४० ॥

लेभे विद्या महादेवादष्टादश महामुने।
शालिहोत्रेश्वरं देवं पूजयित्वा विधानतः॥४१॥

तब हे महामुने ! उन्हें महादेव जी की कृपा से १८ विद्याओं का लाभ हुआ था ॥ ४१ ॥

मूढोऽपि मण्डलाद्याति सर्वविद्यांमहामुने॥४२॥

विधिपूर्वक शालिहोत्रेश्वर महादेव का पूजन करने से हे महामुने ! मूर्ख भी सर्वविद्या विशारद होता है ॥ ४२ ॥

तस्मात्पूर्वे क्रोशपादे नदीरम्भाभिधा मता।
यत्र रम्भा निवसितुं मायापुर्य्यां सरिद्वपुः॥४३॥

वहां से पूर्व की ओर पाव कोश की दूरी पर रम्भा नाम की नदी है। वहां रम्भा अप्सरा ने महाक्षेत्र (हरिद्वार) में निवास करने के लिये नदी का शरीर धारण किया था ॥ ४३ ॥

जाता पुण्यतमा विप्र सर्वपापप्रणाशिनी।
रम्भाकुण्डं च गङ्गायां संगमे पुण्यदायके॥५६॥

और हे विप्र ! वह समस्त पापों का विनाश करने वाली अत्यन्त पवित्र हो गई। और जहां गङ्गाजी के साथ इस का संगम हुआ है उसी पवित्र स्थान में रम्भा कुण्ड है ॥ ५६ ॥

रम्भेश्वरो महादेवस्तत्रैव शिवदायकः।
ततः परं महाभाग कुब्जाम्रकमिति श्रुतम्॥५८॥

उसी स्थान में कल्याण प्रदान करने वाले रम्भेश्वर नाम के महादेव जी विराजमान हैं। हे महाभाग ! उसी के आगे कुब्जाम्रक नाम का स्थान है॥ ५८ ॥

यत्राग्रे कुब्जरूपेण दृष्टो मुनिभिरच्युतः ।
ततः कुब्जाम्रकं तीर्थं सर्वपापप्रणाशनम्॥५९॥

उसी स्थान में महर्षियों ने विष्णु भगवान् को कुब्जरूप धारण किये देखा था तभी से कुब्जाम्रक तीर्थ समस्त पापों को विनाश करने वाला विख्यात है॥ ५९ ॥

सकृद् दृष्ट्वा तु यत्क्षेत्रं परब्रह्मणि लीयते ।

एक बार भी उस क्षेत्र के दर्शन करने से मनुष्य परब्रह्म में लीन हो जाता है।

सुन्देश्वरीं समारभ्य यावद्धेमवती नदी ।
तावत्कुब्जाम्रकं क्षेत्रं पापिनामपिमुक्तिदम्॥४॥

सुन्देश्वरी से आरम्भ करके हेमवती पर्यन्त कुब्जाम्रक क्षेत्र है। यह क्षेत्र पापियों को भी मुक्ति प्रदान करता है। (के० अ०११७)

यत्र रैभ्यो महातेजा उग्रे तपसि संस्थितः ।
आम्ररूपं समासाद्य कुब्जरूपस्य माधवः॥
दर्शयामास भगवान् दर्शनं मुक्तिकारणम् ।

जहां रैभ्य नाम के महातेजस्वी तपस्वी उग्र (घोर) तप करनेमें प्रवृत्त हो रहे थे, माधव भगवान ने कुब्ज के आम्ररूप को धारण कर मुक्ति के कारणरूप अपने दर्शन मुनिको दिये थे।

यहां से केदारखंड आरम्भ होता है। प्रमाण निम्न लिखि[त] भांति है:—

नन्दापर्वतमारभ्य यावत्काष्ठगिरिर्भवेत्।
तावत्केदारकं क्षेत्रं शिवमन्दिरमुत्तमम् ॥३०॥
रत्नस्तम्भं समारभ्य मायाक्षेत्रावधि स्मृतम्।
अतिपुण्यतमं स्थानं हिमालयपदान्तिकम् ३१

नन्दा पर्वत से लेकर काष्ठगिरि (बन्दरपुच्छ पर्वत अर्था[त्] जमुना किनारे तक) तक का भाग केदारखण्ड कहलाता है इसमें उत्तमोत्तम शिवमन्दिर हैं। रत्न स्तम्भ (सुमेरु गन्धमाद[न] का सब से ऊंचे भाग) से लेकर हरिद्वार पर्यन्त हिमालय के नी[चे] का भाग अत्यन्त ही पवित्र माना गया है। इसी भूमि का ना[म] केदारखण्ड है। ऋषिकेशसे केदारखण्डान्तर्गत बद्रिकाश्रम धामकी यात्रा आरम्भ होती है॥ ३० ॥ ३१ ॥

धन्याः कलियुगे घोरे ये नरा बदरीं गताः।
यत्र ब्रह्मादयो देवा हरिभक्तिरताः प्रिये॥१३॥

हे पार्वती! नारायण की भक्तिमें निरत हो जहां ब्रह्मादि देवता सदैव विराजमान रहते हैं ऐसे बदरीवन को जो व्यक्ति कलियुग में यात्रा करते हैं उनके भाग्य को धन्य है!॥१३॥ (के० अ० ५७

गंधमादनं बदरी नरनारायणाश्रमः।
कुबेरादि-शिलारम्यो नानातीर्थविराजितः २०

गन्धमादन,बदरीवन और नरनारायण का आश्रम और अनेक तीर्थों से विराजित कुबेर आदि की रम्य शिला हैं।

यात्रा में तीर्थ श्राद्धादि नित्य नैमित्तिक कर्मों के नियम और माहात्म्यः-

आदौ तीर्थागमे देवं गणेशं भैरवं तथा।
वेदव्यासं पुराणर्षिं मां चैव प्रतिपूज्य हि॥
गच्छेज्जितेन्द्रियः शान्तो ब्रह्मनिष्ठो दयापरः ४

तीर्थागमन की आदि ही में गणेशदेव, पुराणकर्त्ता सूत जी और वेदव्यास जी को तथा हमें पूजकर दयालु शान्त स्वभाव जितेन्द्रिय हो ब्रह्म में अपनी निष्ठा को लगाकर यात्रा करे॥ ४॥

तीर्थप्राप्तिदिने कुर्यान्निराहारं च मज्जनम्।
ततःप्रातः समुत्थाय कृतनित्यक्रियो मुने!
भैरवाज्ञां गृहीत्वा तु तीर्थस्नानमथाचरेत्॥५॥

जिस दिन तीर्थ में पहुँचे उस दिन निराहार रहकर स्नान करे। फिर हे मुने! प्रातः समय उठके नित्य कृत्य से निवृत्त हो भैरव की आज्ञा ग्रहण करके स्नान करे॥ ५॥

स्नानं विप्राज्ञया कुर्यात् दक्षादीन्स्नानकर्म्मणि।
नमस्कृत्य ततो विप्रानावाह्य चात्र देवता ॥
श्राद्धं कुर्यात्प्रयत्नेन श्राद्धदृष्टविधानतः ॥६॥

ब्राह्मण की आज्ञा लेकर स्नान करना कर्तव्य है, फिर स्नान कर्म में दक्षआदिकों को नमस्कार करके स्नान करे। इसके अनंतर ब्राह्मणों और देवताओं का आवाहन करके आश्रम की विधि से यत्नपूर्वक श्राद्ध करना कर्त्तव्य है ॥ ६ ॥

आसनं परिकल्प्यादौ पिण्डदानं ततः परम्।
ततोऽवनेजनं कुर्यात् पुनः पूर्वविकल्पिते॥७॥

उनके निमित्त प्रथम आसन दे। फिर पिंडदान करे, इसके अनन्तर अवनेजन करना (पिंडों के ऊपर जल देना) कर्तव्य है॥७॥

दक्षिणां च ततो दद्याद् ब्राह्मणेभ्यो यथाधनम्।
यस्य सन्तोषमायान्ति तीर्थस्था भूमिदेवताः।
तस्य सर्वं कृतं साग्रं सफलं स्यान्महामुने ॥८॥

इसके पश्चात अपने वित्तानुसार ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे, क्योंकि हे महामुने ! जिसके श्राद्ध में तीर्थ के ब्राह्मण संतुष्ट हो जाते हैं उसका किया हुआ सभी कुछ सफल हो जाता है ॥ ८ ॥

असन्तुष्टा यस्य विप्रास्तीर्थस्थाःश्राद्धकर्मणि।
असन्तुष्टास्तत्पितरो ज्ञेया धर्मपरायणैः ॥९॥

और जिनके श्राद्धकर्ममें तीर्थ के ब्राह्मण असन्तुष्ट रहते हैं, धार्मिक व्यक्तियों को स्मरण रखना चाहिये कि उनके पितर भी असंतुष्ट ही रहते हैं ॥ ९ ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सन्तोषं जनयेत्सुधीः ॥
अन्नदानं ततः कुर्यात्सांगता-सिद्धिहेतवे ॥
एतत्तीर्थे प्रकर्तव्यं श्राद्धं श्रद्धासमन्वितैः ॥१०॥

अतएव उत्तम बुद्धिमान् को चाहिये कि ब्रह्मणों को सन्तुष्ट करे और सांगता की सिद्धि के लिये अन्नदान भी करना कर्तव्य है। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक तीर्थ में श्राद्ध करना चाहिये ॥ १० ॥

श्राद्धात्सन्ततिमाप्नोति श्राद्धाद्वै परमं यशः।
श्राद्धाद्वर्षतिपर्ज्जन्यःश्राद्धात्सुखमवाप्नुयात् ११

कारण कि श्राद्ध ही से सन्तान और श्राद्ध करने ही से यश की प्राप्ति होती है, श्राद्ध ही से मेघजल बरसाते हैं. अथ च श्राद्ध ही से सुख की प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

श्राद्धात्स्वर्गमवाप्नोति श्राद्धान्मोक्षंचविन्दति।
योनरः श्राद्धहीनःस्यात्तस्यनो वर्द्धते प्रजा॥१२॥

श्राद्ध ही से स्वर्ग की प्राप्ति होती है और श्राद्ध करने ही से मोक्ष भी मिलता है, अथच जो मनुष्य श्राद्ध नहीं करता है उसके सन्तान की वृद्धि नहीं होती है ॥ १२ ॥

मृते नरकमाप्नोति तस्माच्छ्राद्धं न संत्यजेत्।
तस्माच्छ्राद्धपरो भूयात्तीर्थेवापि गृहे तथा १३॥

श्राद्धहीन व्यक्ति को मरने पर नरक की प्राप्ति होती है इसलिये मनुष्य श्राद्ध को कदापि नहीं त्यागे। अतएव तीर्थों क्या और घर में क्या सर्वत्र ही मनुष्य को श्राद्ध करने में तत्पर रहना चाहिये ॥ १३ ॥

यहांसे बद्रीनाथ की यात्रा आरम्भ होती है:—

हरिद्वार—यह ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। यहीं से यात्रा का आरम्भ होता है । यह एक महान् पावन तीर्थ है, हर की पौड़ी स्नान का मुख्य स्थान है। कुशावर्त, नीलधारा, बिल्केश्वर, चण्डी देवी का मन्दिर, दक्षप्रजापति का मन्दिर, भीमगोडा, सप्तसरोवर आदि सब तीर्थों की यात्रा करनी चाहिये यहां से हृषीकेश १५ मील है । हृषीकेश जाने के दो रास्ते हैं एक पैदल तांगा तथा मोटर पक्की सड़क का और दूसरा रेल द्वारा। रेल का किराया हरिद्वार से हृषीकेश तक ॥-) है। इस दर्मियान में ९ स्टेशन हैं जहां कि गाड़ी थोड़ी २ देर ठहरती है।

भीमगोडा—हरिद्वार से १ मील । यहां भीमसेन ने गोड़ा टिकाया था इस वास्ते इसका नाम भीमगोडा पड़ा है।

परदूनी—भीमगोडा से ३ मील । यहां श्रीमान् बहादुरमल हरगोविन्द भिवानी निवासी की धर्मशाला और कुंवा आ

है। लागत २०००) रु०, हरिपुर (इलाका परदूनी में) श्रीमान् सेठ नत्थीमल्ल जी दीवान की धर्मशाला और कुंआ जो अब खन्दर हो गये। परदूनी में बावा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से यात्रा समय एक प्याऊ रहती है और एक गोशाला भी है।

रायवाला—परदूनीसे ३ मील। यह रेल का स्टेशन है। यहाँ नाथूराम, रामकृष्ण खेमका रतनगढ़ निवासी की धर्मशाला है। जिस में लागत ४०००) रुपया लगा है और श्रीमान् हरसहायमल सुखदेव दास पोद्दार खुरजा निवासी का कुंवा है। जिस में लागत २०००) रु० लगी हैं और बावा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषीकेश की ओर से प्याऊ १२ महीने रहती है। आगे आध मील पर सूसवा नदी का पुल है। जिस के पास ही बाबाजी की गौशाला और थोड़ी जमीन हिस्सा मौजा गोहरी में है।

सत्यनारायण—रायवालासे १ मील। यहाँ सत्यनारायण जी का मंदिर है जिस में २०००) रु० श्रीमान् सन्तलाल सिन्धी अमृतसर वाले की माता श्रीमती करमो बाई की ओर से लगे हैं, ३०००) रु० क्षेत्र के लगे हैं, इसी माई करमो बाई की बेटी श्रीमती नैनो बाई की ओर से ११००) रु० लागत का कुआँ बना है। श्रीमान् राजा ललिताप्रसाद, हरिप्रसाद पीलीभीत वालों की धर्मशाला है, लागत २५००) रु०, श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम्-प्रेसाध्यक्ष मुम्बई वाले ने धर्मशाला के वास्ते ५०००) रु० दिये हैं। श्रीमान् सेठ रामचन्द्र तुलाराम गोंदका खुरजा वाले की धर्मशाला लागत ३०००) रु०, श्रीमान नाथूराम पोद्दार बिसाऊ वाले की

धर्मपत्नी ने यात्रियों की रसोई के लिये मकान बनवाया है। लागत १०००) रु०, सत्यनारायण की रसोई का मकान पञ्चायती क्षेत्र से बना, लागत ६७५) रु०, लाला गौरीशङ्कर जगरांवां वाले की धर्मपत्नी माई किशनदेई की ओरसे १०००) रु० की धर्मशाला है, प्याऊ बाबा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेशकी ओर से है। सदावर्त श्रीमान् सेठ महादेवलाल जी सोमाणी चिड़ावा वालों की तर्फ से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० नमक मिर्च और साधुओं को बना हुआ भोजन दिया जाता है, चने छौंके हुए दिये जाते हैं। सेठ घनश्याम दास बालाबक्स मन्त्री चूरू निवासी की तर्फ से जलका कुण्ड और घराट हैं, लागत ४५००) रु०। यहां बाबा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से उपरोक्त पनचक्की का प्रबन्ध है जिस से रोज़ाना ताजा आटा पीसकर साधु महात्माओं के लंगर के वास्ते ऋषिकेश भण्डार में भेजा जाता है। सेठ बहादुरमल-हरगोविन्द जी की धर्मशाला लागत २५००) रु०। और एक धर्मशाला श्रीमान् श्यामलाल, मोतीलाल, मूलचन्द हाथरस निवासी की ओर से लागत ८००) रु०।

इस के आगे सौंग नदी जिस को घोड़ापछाड़ भी कहते हैं उसमें वर्षात की मौसिम में हर साल यात्रियों को तकलीफ होती थी, जान व माल तक का नुकसान हो जाता था। श्रीमान् राय बहादुर सेठ सूर्यमल शिवप्रसाद झुंझनू वाले, चिड़ावा-निवासी, (हाल कलकत्ता) ने इस कष्ट को दूर करने के लिये पचास हजार ५०,०००) रु. देकर पुल बनवा दिया है, जिस में लागत करीब एक लाख रुपये लगे हैं बाकी रुपये गवर्नमेन्ट ने लगाये हैं। इसके आगे भी हृषीकेश तक सब नदी नालों के पुल बन गये हैं जिन

के वास्ते धर्मात्माओं ने इस भांति रुपये दिये हैं—श्रीमान् शिवदास गङ्गादास मौहता बीकानेर निवासी ने १०००) रु०, राय बहादुर सर्दार बूटासिंह रावलपिंडी वाले ने २२००) रु०, भाई गुरुमुख सिंह अमृतसर वाले ने २००) रु०, भाई नत्थासिंह ने २००) रु०।

बीबीवाला—सत्यनारायण से २॥ मील बीबीवाला है। यह धर्मशाला श्रीमान् जवाहरमल, जयनारायण मित्री चुरूवाले ने बनवाई, लागत ६५०) रु०। कूप श्रीमान् खूबचन्दन कन्हैयालाल कनखल निवासी ने बनवाया, लागत ८००) रु०, प्याऊ पंचायती क्षेत्र की ओर से यात्रा समय लगा करती है।

दूधूपानी—बीबीवाला से १ मील दूधूपानी है। यहां धर्मशाला और कूप श्रीमान् शिवनारायण-रामनारायण बौरा का लागत १०००) रु०, श्रीमान् रामचरण हजारीलाल पटोदिया का दूधनाथ महादेव का मन्दिर स्थापित किया है लागत २५०) रु०, और प्याऊ भी यात्रा समय पंचायती क्षेत्र हृषीकेश की ओर से लगती हैं, यहां बाबा जी की गौशाला भी है।

रामनगर-गङ्गाद्वार—दूधूपानी धर्मशाला से १ मील पर सर्कार गवर्नमेण्ट ने ५९२ एकड़ जमीन बाबा जी के क्षेत्र के नाम मंजूर की है, इस में से २०० एकड़ जमीन मिल गई है, यहां पर एक अच्छा साधू आश्रम तथा बाग बन रहा है, इस का नाम रामनगर-गङ्गाद्वार रक्खा गया है।

ऋषिकेश—रामनगर गङ्गाद्वार से २ मील पर हृषीकेश महा उत्तम तीर्थ और तपोभूमि है। यहां स्नान दानादि करने का

विशेष फल है। यहां का प्रयागराज से भी अधिक माहात्म्य है और पिंडदान करने का बहुत फल है। एक रात्रि को निवास करनेसे अनन्य पुण्य के भागी बनते हैं। यहां पर प्राचीन स्थान भरत जी का मन्दिर है। हृषीकेश तपोवन की जमीन इस मन्दिर अर्थात् भरत जी महाराज के नाम साधू सन्त तथा गउओं के निमित्त महाराज टिहरी नरेश की ओर से माफी है, साधू महात्मा हृषीकेश में बहुत रहते हैं और भजन ध्यान करते हैं। यहाँ पर बावा काली कमली वाले वैकुण्ठ—निवासी श्री १०८ बाबा रामनाथ जी का पंचायती क्षेत्र है। अब इसके मुन्तजिम बाबा मनीरामजी काली कमलीवाले हैं परन्तु चिट्ठी पत्री व कारोबार में बाबा काली कमली वाले रामनाथ जी ही लिखा जाता है। इस में सेठ साहूकारों और धर्मात्मा पुरुषों की तरफ से बहुत से मकान बने हुए हैं, जिनमें यात्रियों को हर तरह से आराम मिलता है और सज्जनों के नाम के पत्थर भी लगे हैं। अक्सर यात्री महाशय इसी क्षेत्र में ठहरा करते हैं। यहां पर बाबा काली कमली वाले का अन्नक्षेत्र बारहों महीने खुला रहता है. जिस में हमेशा परमहंसों को बना हुआ भोजन और सदावर्त लेने वालों को आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० नमक, मिर्च, लकड़ी ऽ१ एक रोज़, व पन्द्रह दिन के लिये आटा ऽ३॥।, दाल ऽ। और मसाला वगैरह दियासलाई, तेल और गेरू आदि जिन चीजों की साधू व विद्यार्थियों को जरूरत होती है यथोचित प्रबन्धानुसार दी जाती है। विद्यार्थियों को भी भोजन मिलता है रोगियों को औषधि और यथायोग्य पथ्य दिया जाता है। इस काम के लिये क्षेत्रके औषधालय और वैद्य हैं। यहाँपर एक संस्कृत

पाठशाला तथा पुस्तकालय और वाचनालय, आयुर्वेद विद्यालय, अनाथालय, तथा वानप्रस्थ आश्रम भी हैं। इस क्षेत्र की और भी बहुत सी धर्मशालाएँ और सदावर्त तथा कई औषधालय बद्रीनाथ, गङ्गोत्तरी, यमनोत्तरी लैन में हैं. जिन का हाल इस पुस्तक में यथास्थान लिखा है। ऋषिकेश में इस क्षेत्र के अलावे और भी क्षेत्र और धर्मशालाएं सज्जन श्रीमानों की बनाई हुई हैं। अक्सर धर्मात्मा पुरुष माघ के महीने में ऋषिकेश वास करके भजन पूजन और पुण्य कर्म करते हैं। क्षेत्र के दोनों दरवाजों पर बारहों महीने प्याऊ रहती हैं और बाबा जी के पश्चायती क्षेत्र से यात्रा में जाने वाले यात्रियों को जल-लाग की दवाई मुफ्त दी जाती है, जो वैकुण्ठवासी बाबा रामनाथ जी काली कमली वाले की अनुभवी औषधि है।

धन्वन्तरि भवन—ऋषिकेश से दो फर्लांग पर श्रीधन्वन्तरी जी महाराज का मन्दिर है जो सेठ शिवप्रसाद जी रामजी दास कलकत्ता वालों की ओर से लागत ६०००) रु० का बना है और आयुर्वेदिक विद्यालय है जो बाबा जी के पश्चायती क्षेत्र की लागत से तय्यार हुआ है और एक साधू-आश्रम शिवदत्तराय जी सांवलका का है और पश्चायती क्षेत्र की तरफ से एक प्याऊ भी है।

ऋषिकेशसे मुनिकी रेती—१॥ मील है। यहां से टिहरी राज्य की हद शुरू हो गई है। यहां शत्रुघ्न जी का मन्दिर है, जिसमें धर्मशाला का जीर्णोद्धार सेठ तुलाराम गौरीशंकर

खुरजा वालों ने किया है । गङ्गा बहती में टूट जाने के कारण पुनः बनाने का विचार है । यहां मुनियों ने तप किया था इस लिये इस का नाम **मुनीकीरेती** हुआ । यहां से १० मील पर **नरेन्द्रनगर** को मोटर की सड़क जाती है, यहां महाराजाधिराज नरेन्द्र शाह जी टिहरी नरेश, की राजधानी है । श्री बद्रीनाथ जी की गद्दी है । राज्य की ओर से मुनिकी रेती में शिल्पशाला, जङ्गलात चौकी, दवाईखाना तथा दीवान साहब की कोठी है, बोझा झम्पान, डंडी आदि के लिये कुलियों का प्रबन्ध यहीं से होता है । राज्य की ओर से कुलीएजेन्सी नियत है, पास में कैलाशाश्रम बड़ा मनोहर और दर्शनीय है। कैलाशाश्रम के पास ही में देहरादून के रईस लाला ज्योतिप्रसाद जी की बहिन द्रौपदी माई की धर्मशाला है, जिसमें श्री १०८ पूज्यपाद स्वामी मंगल नाथजी महाराज निवास करते थे अतः "मङ्गलाश्रम" के नाम से प्रसिद्ध है। इसका प्रबंध एक ट्रष्ट कमिटीके अधीन है। सन् १९२४ की गङ्गा बहती से इसका कुछ हिस्सा गिर गया था जिसको कि स्वामीजी के भक्तोंने फिर बनवा दिया है । पास में स्वामी रामतीरथ जी की स्मारक रामाश्रम नामकी लायब्रेरी है, शिवजी का मन्दिर है । संवत् १९६० में सड़क श्रीमान् माधोप्रसाद जी, ज्ञानीराम ने बनवाई थी, लागत ५००) रु०। आगे पक्की सड़क श्रीमान् रायबहादुर शिवप्रसाद खत्री दिल्लीवाले ने संवत् १९५१ में बनवाई लागत १०००) रु०। गङ्गाजी के पार में बाबा काली कमली वाले का **स्वर्गाश्रम** है ।

लक्ष्मणझूला-मुनिकीरेती से १॥ मील। यहां लक्ष्मण जी का मन्दिर है. लक्ष्मणेश्वर महादेव के दर्शन शास्त्रोक्त हैं। झूला श्रीमान् रायबहादुर सूर्यमल शिवप्रसाद जी ने संवत् १९४४ में बनाया था जो गङ्गा बढ़ती के समय टूट गया था, अब फिर उक्त सेठ जी ने १२००००) रु० गवर्नमेंट को नये पक्के लोहे के पुल को बनाने के लिए दिये हैं,यह एक अद्भुत दर्शनीय पुल बना है। यहां पर धर्मशाला श्रीमान् दुर्गाप्रसाद सूरतराम की है जिसमें लागत २५००) श्रीमान् कन्हैयालाल बद्रीनारायण डागा बीकानेर निवासी की धर्मशाला लागत १८००) धर्मशाला बह गई थी फिर बन गई है। ध्रुव कुण्ड श्रीमान् विष्णुदयाल हरदयाल सुरे का लागत ३००), सनेहीराम हजारीमल पटोदिया की लागत २५०) और ७५) पञ्चायती है। सदावर्त श्रीमान् रामनिरञ्जन बद्रीदास पटनावाले की ओर से आटा ऽ १ आलू ऽ। घी १ तो० है।

लक्ष्मणझूले के रास्ते में अंधेरी घाटी से ऊपर पानी का नल व डिग्गी शेषधारा पर बाबा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की तरफ से बनाई गई है।

गरुड़चट्टी--लक्ष्मणझूले से २ मील गरुड़चट्टी है। यहां धर्मशाला श्रीमान् हजारीमल, सावतराम चिड़ावा वालों की है। लागत ५०००)। लक्ष्मणझूले से नाईमोहन तक ९ मील सड़क सीधी और मनोरञ्जक है।

फुलवाड़ी--गरुड़चट्टी से २ मील फुलवाड़ीचट्टी गङ्गा जी के किनारे पीपल की मनोहर छाया में है।

गूलरचट्टी--फुलवाड़ी से गूलरचट्टी २ मील है। नदीपास है, आगे ह्यूल नदी में पुल लगा हुआ है।

महादेवसैंण--गूलरचट्टी से १ मील पर महादेवसैंण है। यहां एक धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की और महादेवजी तथा गरुड़ जी के मंदिर हैं। सदावर्त श्रीमान् सेठ भगवानदास जी सीताराम पोद्दार रंगून वालों का आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तो० नमक मिर्च व लकड़ी ऽ १, प्याऊ पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लगती है।

नाईमोहन--महादेवसैंण से १ मील नाईमोहन चट्टी है। यहां से ४ मील की चढ़ाई शुरू होती है। चढ़ाई पर धूप व प्यास से बचने के लिये सुबह को चढ़ना चाहिये।

बड़ी बिजनी--नाईमोहन से ३ मील है। १॥ मील जावल प्याऊ श्रीमान् सेठ सनेहीराम जी जवाहरमल कलकत्ता वालों की, उससे आगे आध मील पर छोटी बिजनी चट्टी है। छोटी बिजनी से १ मील बड़ी बिजनी चट्टी है, यहां झरने का मधुर जल और आमकी छाया है।

कुण्ड--बड़ी बिजनी से कुण्डचट्टी ३ मील है। बड़ी बिजनी से १॥ मील न्योड़खाल प्याऊ लाला गुरुसहायमल जी दलाल अमृतसर वाले की ओर से है। न्योड़खाल से आगे रास्ता २ मील सीधा है। न्योड़खाल से १॥ मील पर कुण्ड चट्टी है, यहां प्याऊ गुरुमुखसिंह, गुरुसहायमल दलाल की है। श्रीमान् जेठा भाई

बूलचन्द जी कलकत्ते वाले ने सड़क और झरना बनवाया है यहां का जल अति ठण्डा, मशहूर है।

बन्दरभेल—कुण्डचट्टी से बन्दरभेल ३ मील पर है। यहां एक प्याऊ पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लगती है। आगे रास्ता उतराई का है। चट्टी गङ्गाजीके किनारे पर है और पीपल की मनोहर छाया है। दुकानदार सख्त हैं। आगे रास्ता सीधा है।

महादेव—बन्दरचट्टी से ३ मील महादेव चट्टी है, यह गङ्गाजी के पास ही है। मार्ग अच्छा और सीधा है।

सेमल चट्टी—४ मील। पहिले महादेव चट्टी से २॥ मील पर ओखलघाट की प्याऊ श्रीमान् गुरुमुखसिंह गुरुसहायमल दलाल अमृतसर वाले की ओर से है। ओखलघाट से १॥ मील सेमल चट्टी है। चट्टी से कुछ आगे एक प्याऊ श्रीमान् सेठ गुरुमुखसिंह जी गुरुसहायमल दलाल अमृतसर वालों की तरफ से है।

कांडी—सेमलचट्टी से ३ मील है। पहिले २ मील पर खण्डा में आमों की मनोहर छाया है, खण्डा से १ मील कांडी है जवाहरा साहूकार ने यहां गोपालजी का मन्दिर स्थापित किया है। एक धर्मशाला किसी श्रीमान् ने बनवाई है क्षेत्र की तरफ से उसमें बर्तन व चौकीदार रहता है।

व्यासघाट—कांडीसे ४ मील पर है। पहिले १ मील आगे एक प्याऊ श्रीमान् सेठ गङ्गासरन जी रेवती सरन हापड़ वालों की तरफ से है। यहां से १ मील पर भैरोंखाल है। यहां पर भी एक प्याऊ रहती है यहां तक रास्ता सीधा है। भैरोंखाल से आगे २ मील की उतराई है, व्यासगङ्गा का पुल मनोहर है। व्यास जी का मंदिर है। श्रीमान् बालकृष्ण फतेहलाल राठी का सदावर्त और धर्मशाला लागत ४०००) रु० की है। सदावर्त में आटा ॥ दाल ऽ॥ घी एक तोला दिया जाता है। और श्रीमान् जेठा भाई बूलचन्द कलकत्ता वाले ने एक प्राचीन मंदिर 'शुभेश्वर महादेव की मरम्मत कराई परिक्रमा बनवाई लागत १००) रु० लगी है व्यासगङ्गा और गंगा भागीरथी का सङ्गम है धर्मशाला श्रीमान् पण्डित जानकीनाथ काश्मीरी की लागत १५०) और प्याऊ पंच यती क्षेत्र ऋषिकेश की तरफ से है। एक मील आगे सत्यनारायण जी का मन्दिर, धर्मशाला, पाठशाला और आमों का अच्छा बाग है।

छालड़ीचट्टी—व्यासघाट से ३ मील है। रास्ता ३६ मील तक सीधा चला गया है।

उमरासू—छालड़ी से २ मील है, यहां सुन्दर आमों की मनोहर छाया है।

सौड़चट्टी—उमरासू से २ मील है। यहां जलका आराम तथा आमों की छाया है। स्थान अच्छा है।

देवप्रयाग—सौड़ से २ मील है। यहां भागीरथी और अलकनन्दा का संगम है, रघुनाथ जी का मंदिर है। धर्मशाला श्रीमान् मनसुखराय मांगीलाल नवलगढ़ वालों की लागत १२००) रु० और श्रीमान् शिवदत्त सांवलका की लागत ६०९) रु० जो अब टूट कर पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से मरम्मत की गई है और श्रीमान हरिबख्श गोबरधन दास की लागत ७००) रु० और भी कई धर्मशाला हैं जिनमें रुपया पञ्चायती क्षेत्र से लगा है। धर्मशाला श्रीमान् मोहनलाल शिवचन्द राव बैलवाले की मारफत माई जगतारिणी बङ्गालिन की बनी है। धर्मशाला में वट की छाया है और घाट पञ्चायती हींगन घाट वालों की ओर से मार्फत जीवराज पोद्दार और बाहर में घाट जैनारायण सीताराम सिंघानिया की लागत २००) रु० का था जो वह गया है, और अलकनंदा पार धर्मशाला श्रीमान् हरसुखराय जानकीदास बागले की लागत १०००) रु० इसकी मरम्मत अब पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओरसे की गई है। घाट भी इन्हीं का है परन्तु मरम्मत तलब है सब टूटाफूटा है और सदावर्त गङ्गोत्तरी जाने वाले साधुओं को श्रीमान् सेठ तुलाराम जी गौरीशङ्कर खुर्जा निवासी की तरफ से आटा ऽ१। दाल ऽ। घी १ तोला नमक मिर्च और बद्रीनाथ जाने वालों को श्रीमान् सेठ सूरजमल जी लछमनदास खुर्जा वालों की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च दिया जाता है। पार में धर्मशाला वेमरम्मत थी पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से मरम्मत करदी गई है यात्रा के समय अलकनन्दा के वार पार दोनों जगह पंचायती क्षेत्र की ओर से प्याऊ भी लगा करती है।

यहां से एक लेन यमनोत्तरी, गङ्गोत्तरी को हो कर जाती है। और दूसरी सीधे बद्रीनाथ को यहांसे राजधानी टिहरी २४ मील है, मार्गमें धर्मशाला बनाने का विचार है। इस मार्ग का वर्णन आगे चल कर करेंगे। अभी सीधे बद्रीनाथ जी को चल रहे हैं।

देवप्रयाग से २ मील पर विद्याकोटी में प्राचीन मंदिर है। विद्याकोटी से ३ मील सीताकोटी है। मंदिर टूट गया है प्याऊ सेठ भगवानदासजी सीताराम पोद्दार बिसाऊ निवासी हाल रंगून वालों की ओर से लगती है।

रानीबाग—सीताकोटी से २॥ और देवप्रयाग से ८॥ मील पर है। किसी समय एक श्रीमती ने यहां बाग लगाया था। स्थान अच्छा है। आगे १॥ मील पर कोल्टा में बंगला है। वासमती के चावल मशहूर हैं।

रामपुर—रानीबाग से ३॥ मील है। जल के मनोहर झरने शोभा दे रहे हैं चट्टी अच्छी है। यहां से दो मील ऊपर ब्रह्मचारी चक्रधर जी की पाठशाला है।

अरकणी—रामपुर से ३ मील है। आमके पेड़ों की सघन छाया है, यहां सुबेदार रामकृष्ण रावत जी की ओर से प्याऊ रहती है। आध मील आगे, अरकणी के पद्मसिंह भण्डारी का आम का बाग और जल की डिग्गी और धारा है।

बिल्वकेदार—अरकणी से २ मील है। यहां बिल्वपत्र चढ़ाने का बड़ा माहात्म्य है, मन्दिर प्राचीन है, भिल्लगङ्गा का संगम है, यहां पर अर्जुन के साथ भिल्लरूप से महादेव जी का

युद्ध हुआ था। स्थान अच्छा है, सामने इन्द्रकीट पर्वत है और खाण्डव नदी ढूण्डप्रयाग में अलकनन्दा से मिलती है।

श्रीनगर—बिल्वकेदार से ३ मील है। श्रीनगर की पुरानी बस्ती को सम्बत् १६५१ में विरही गङ्गाकी बाढ़ ने बहा दिया था, केवल कमलेश्वर महादेव का मंदिर बच गया है, यहाँ कमलेश्वर में आमदनी अच्छी है, अतिथियों को आटा भी देते हैं महन्त जी से प्रार्थना है कि विद्यारूपी दान करके उत्तराखण्ड को सुशोभित करेंगे। पुराने श्रीनगर में शङ्करमठ और अश्वतीर्थ दर्शन योग्य हैं। यहां से १ मील पर सरकार ने नया श्रीनगर बसाया है। नगर मनोहर है। गढ़वाल की श्री यहीं निवास करती है। धर्मशाला श्रीमान् मोहनलाल हीरानन्द सर्राफ की लागत २००००)॥ रु० यहां आप का सदावर्त भी है आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला लकड़ी दी जाती है। गङ्गा जी का किनारा है धर्मशाला की शोभा गङ्गा जी के कारण बहुत है, धर्मशाला के अन्दर १ नल लगा हुआ है और सत्यनारायण जी का मंदिर भी उक्त श्रीमान् जी की ओर से नया बना है।

यहां एक सर्कारी हाईस्कूल गढ़वाल के सज्जनों ने कोशिश करके बनवाया है जिस में बोर्डिंगहाउस (छात्रावास) के लिये ३०,०००) रु० और स्कूलके लिए १२०००) रु० श्रीमान् महाराजा कीर्तिशाह जी ने दिये हैं और १०००) रु० मोहनलाल शिवचन्द राय बैलवाले ने दिये, स्कूल की जमीन इन्हीं १०००) रुपयों से खरीदी गई है। श्रीमान के नाम से साइनबोर्ड भी लगा है। और श्रीमान् सौदागरमल, और श्रीमान सन्तलाल की धर्मशाला है।

यहां हुण्डी नोट आदि सब व्यवहार होते हैं। शफ़ाखाना, डाकखाना, तारघर भी है, यह गढ़वाल का केन्द्रस्थान है। नारद जी को मोह तथा वन्दरमुख यहां ही हुआ था। यहां से ८ मील पर पौड़ी तहसील तथा गढ़वाल का हेडक्वार्टर है।

सुकता—श्रीनगर से ५ मील है। आम की छाया है गङ्गाजी निकट हैं। यहां यात्रा समय प्याऊ का प्रवन्ध भी पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से रहता है।

भट्टीसेरा—सुकता से ३॥ मील है। नदी पास ही चलती है। धर्मशाला श्रीमान् सेठ आशाराम जी अविचलदास जी पाधरा निवासी की लागत ९००) रु० और सदावर्त श्रीराम सेठ मुकुट विहारीलाल जी मदनस्वरूप मुरादावाद वालों की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिर्च का है। भट्टीसेरा से १ मील चढ़ाई चढ़कर छांतीखाल में बँगला है। प्याऊ श्रीमान् मुर्लीमल जी राधाकृष्ण अम्बाला छावनी वालों की ओर से लगी है।

खांकरा—छाँतीखाल से २॥ मील उतराई उतर कर स्थान मनोहर नदी के किनारे पर है आगे १॥ मील तक चढ़ाई है। बाद को एक मील की उतार है।

नरकोटा—खांकरा से २॥ मील। स्थान अच्छा मनोहर एक मील की चढ़ाई चढ़ कर पञ्च भाइयों की धार है, यहां प्याऊ की जरूरत है।

गुलाबराय—यहां से ३॥ मील । मनोहर झरना, सुन्दर आमों की छाया है कदली तरुओं से सुशोभित है ।

रुद्रप्रयाग--गुलाबराय से १॥ मील। रुद्रनाथ जी का मंदिर है, मन्दाकिनी और अलकनन्दा का संगम है, घाट श्रीमान् राय हजारीमल जी दूधवे वाले बहादुर कलकत्ता निवासी की ओर से लागत १२०००) पर बना है। अलकनन्दा का पुल पार कर जाना चाहिये। चट्टी में जल की धारा श्रीमान् वेगराज जी विश्वे-श्वरलाल की है लागत २००) रु० लगी है । धर्मशाला श्रीमान् सेठ मोहनलाल जी चिरञ्जीलाल बाघला हाथर्स निवासी की लागत १००००) रु० तथा सदावर्त आटा ऽ॥ दाल ऽ= घी १ तोला नमक मिर्च का है। यहां डाकखाना, तारघर भी है। यहां से एक रास्ता सीधा बद्रीनाथ को जाता है, दूसरा केदारनाथ को। यात्री-गण धर्म मर्यादानुसार मन्दाकिनी के किनारे २ पहिले केदारनाथ को जाते हैं। ऋषिकेश से रुद्रप्रयाग ८० मील है और रुद्रप्रयाग से केदारनाथ ५४ मील है, रुद्रप्रयाग से आगे २० मील तक रास्ता सीधा है ।

छतोली--रुद्रप्रयाग से ५ मील। झरने का जल पास है। छतोली से १ मील पर मठ चट्टी है। स्थान अच्छा है ।

रामपुर--मठ से १ मील है । स्थान अच्छा है ।

अगस्तमुनि--रामपुर से ४॥ मील है, यहां अगस्तमुनीका मंदिर है, मैदान अच्छा है गङ्गा जी दूर हैं। नल सेठ नेतराम राम-बक्स केड़िया की ओर से लागत १६००) रु० का लगा है।

एक धर्मशाला सेठ गुट्टीराम मंगतराम अमृतसर निवासी की सदावर्त श्रीमान सेठ हीरालाल जी मुरारीलाल गोटे वाले देहली निवासी की तरफसे आटा ऽ॥ दाल ऽ= घी १ तो० नमक मिर्च का है। मन्दिर महावीर जी का सेठ कन्हैयालाल मुर्लीधर चिमड़िया रतनगढ़ वालों का लागत ८५०) रु० का बना है, धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लागत २५००) रु० की और एक रसोईघर सेठ हीरालाल जी मुरारीलाल गोटेवाले देहली निवासी की लागत १५५०) रु० की है। दवाईखाना पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओरसे लगता है और दवाई मुफ्त दी जाती है।

यहांसे आध मील पर छोटा नारायण का मन्दिर है। मूर्ति विशाल है, सामने रुद्राक्ष के वृक्ष हैं।

सौड़ी--छोटा नारायण से १॥ मील पर सौडी चट्टी है।

चन्द्रापुरी--सौड़ी से २ मील पर है। यहां चन्द्रशेखर महादेव और दुर्गा जी का मंदिर है, मन्दाकिनी और चन्द्रा नदी का संगम है, यहां झूला उतरना पड़ता है चट्टी अच्छी है।

भीरी--चन्द्रापुरी से २॥ मील है। मन्दाकिनी पार करने के लिए एक सुन्दर पुल बना है। भीमजी के दर्शन हैं। टिहरी तथा बूढ़ाकेदार से एक मार्ग (बटिया) यहां पर आ मिलता है।

कुण्ड--भीरी से ३॥ मील है, कुछ ठंड शुरू होती है। आगे १॥ मील की चढ़ाई है।

गुप्तकाशी--कुण्ड से २॥ मील है। शिवजी के दर्शन हैं। स्थान अच्छा है, डाक बंगला, तारघर और पो० ऑफीस है।

धर्मशाला श्रीमान् सेठ ईश्वरदास धर्मचन्द सिंघानियां की लागत ४'१००) रु० की है। सदावर्त सेठ कन्हैयालाल खण्ड़ेलवाल गुड़ा निवासी का है। एक गौमुखी धारा है, मकान यात्रियोंके निवास को अच्छे हैं, मन्दिर बहुत प्राचीन है, यहां गुप्तदान देने का बड़ा माहात्म्य है । मन्दाकिनी को पार कर सामने दो मील पार ऊखी-मठ है यहां शफाखाना भी है और केदारनाथ के रावलजी की गद्दी है।

गुप्तकाशी से १॥ मील आगे नाला चट्टी है । केदारनाथ से लौट कर इसी जगह से सीधे ऊखीमठ होते हुए बद्रीनाथ जी को जाते हैं। इस सारी लैन में तारघर, सिर्फ, गुप्तकाशी में है।

नाला से १ मील माता देवी का मन्दिर है, चट्टी अच्छी है, जल सुन्दर है, प्राचीन मन्दिर के अलावा ४-५ मन्दिर और भी हैं।

नारायणकोटी—माता देवी से १ मील नारायणकोटी है इस चट्टीको भेत्ता भी कहते हैं। मन्दिर में प्राचीन-विशाल मूर्ति है, स्थान अच्छा है। आगे १ मील उतारका रास्ता उतर कर ब्योंग चट्टी आती है। यहां नदी के पास लकड़ी के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं।

आध मील की चढ़ाई चढ़ कर ब्यूंग मल्ला चट्टी है।

मैखण्डा—ब्योंग से २ मील पर महिषमर्दिनी देवी का मन्दिर और हिंडोला है। यहां महात्मागण निवास करते हैं, कोई कोई यात्री झूला भी झूलते हैं।

फाटा—भैखण्डा से २ मील है । यहां दुकानें अच्छी हैं सब माल मिलता है, पवनचक्की और सरकारी धर्मशाला है । रास्ता सीधा है ।

रामपुर—फाटा से ३ मील है । धर्मशाला श्रीमान् सेठ छबीलदास--लछमीदास भीमजी बम्बई निवासी की लागत २०००) रु० की है । सदावर्त सेठ साथूराम जी तुलाराम खुर्जा निवासी की ओर से आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तो० और नमक का है ।

यहां बावा जी के पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से पट्टू, कम्बल, ५ रोज के लिये, जो यात्री लेना चाहे, दिया जाता है। फालतू सामान को भी यहीं रख लेना चाहिये क्योंकि इसी रास्ते से वापिस होना है।

यहां धर्मशाला सेठ सनेहीरामजी जवाहरमल खेमका झुंझनू निवासी की लागत २८००) रु० की है। यहां बागीचे के लिये एक नाली जमीन पं० हनुमान प्रसाद हैदराबाद दक्खिन वालों ने ले रक्खी है।

त्रियुगीनारायण—रामपुरसे ४॥ मील है । रास्ता सीधा और चढ़ाईका है । पहिले १॥ मील पाटागाडका पुल है, यहांसे एक रास्ता त्रियुगीनारायण को चढ़ाई का है, और दूसरा सीधा केदार-नाथ जी को जाता है । पाटागाड से ३। मील त्रियुगीनारायण है दर्मियान में मनशादेवी का मन्दिर है। यहां आराम करते हैं पानी, की धारा पास है, त्रियुगी में धुनी है, मन्दिर विशाल है, ठंड

अधिक है, स्नान के लिए कुण्ड है, मन्दिर और कुण्डों की मरम्मत पण्डित गोपालशङ्कर, बेनीशङ्करजी भचेच मुकाम अहमदाबाद निवासी ने की है लागत ६००) रु० लगा है, मन्दिर के पास धर्मशाला श्रीमान् जगन्नाथ मदनगोपाल मोता ने लागत ९००) रु० से बनवाई थी जिसकी मरम्मत सेठ नेतरामजी रामबख्श केड़िया रंगून वालों ने कराई लागत १२००) रु० पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से एक रसोई घर बना है एक नाली जमीन और खरीद रक्खी है। धूनी में होम कराने का बड़ा माहात्म्य है, धर्मशाला श्रीमान् हरीबक्स जी गोवरधनदास देवड़्या कलकत्ता निवासी की लागत २०००) रु० सदावर्त सेठ लक्ष्मीनारायण जी भगवानबक्स सोमानी मोलासर वालों का आटा ऽ॥ दाल ऽ घी एक तो० का है।

सोमद्वारा—त्रियुगीनारायण से ३। मील की उतार उतर कर सोनप्रयाग में पहुँचते हैं। यहां पर सोमनदी और मंदाकिनी का संगम है। पुल पार कर १ मील पर सुण्डकटा गणेश है।

गौरीकुण्ड—सोमद्वारे से ३ मील गौरीकुण्ड है। रास्ता अच्छा बन गया है, लादी २ चढ़ाई है यहां एक कुण्ड में गरम जल और दूसरे में शीतल जल है। कुण्डों में स्नान किया जाता है, सदावर्त सेठ आज्ञाराम मेघराज राठी धनोरा की ओरसे आटा ऽ॥ और नमक का है यहां धर्मशाला की बड़ी जरूरत है।

गौरीकुण्ड से एक मील चिरपटिया भैरों है यहां पर वस्त्र चढ़ाया जाता है चिरपटिया से १ मील भीमसेन शिला है।

रामबाड़ा—गौरीकुण्ड से ४ मील, और भीमशिला से दो मील है। यहां धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्रकी लागत ५५००) रु० की है, जिसमें १०००) रु० सेठ उत्तमचन्द जी धारीलाल अमृतसर-वालोंके और १६५१) रु० सेठ नेतराम जी रामबक्स रंगून वालेके और बाकी २८४९) रु० पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लगे हैं, ऊपर जाते सेठ लच्छीराम चूड़ी वाले बम्बई निवासी की ओर से चाय बनी हुई या आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तो० और नमक का सदावर्त है और नीचे आते सेठ बसन्तलाल जी घनश्यामदास कलकत्ता निवासी की ओर से चाय बनी हुई या आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तो० दिया जाता है। केदारनाथ में अधिक ठंड होने के कारण यात्री सुबह को केदारनाथ जाकर शाम को वापिस रामवाड़ा में आजाते हैं। इसलिये फालतू सामान यहीं छोड़ जाते हैं।

पुरी केदारनाथ—रामवाडा से दो मील देवदेखनी है, यहां से श्रीकेदारनाथ जी का मन्दिर दिखाई देता है। और देवदेखनी से १ मील पुरी केदारनाथ है, मंदिर पाण्डवों का बनाया हुआ बहुत पुराना है। सम्वत् १९५१ में कलकत्ता के सज्जन गणों ने छतरी बनवाई थी, पुरी अति शीतमय है। यहां स्नान, दान, ध्यान का महान् पुण्य है। यहां धर्मशाला श्रीमान् मुलतानचन्द नागरमल की लागत ५००) रु०, श्रीमान हृषीनाथ, शिवकृष्णदास बागडी की लागत ६००) रु० घाट श्रीमान् गौरीदत्त बालमुकुन्द गनेड़ीवाले की लागत ५००), घाट पर मकान श्रीमान् सन्नीलाल जी हनुमानदास का है लागत ४००) रु० और धर्मशाला बनाने के लिये श्रीमती रानी जैदेवी ने १०००)रु० दिये हैं धर्मशाला बन चुकी है उदक कुण्ड के जल का चरणामृत लेने का बड़ा

माहात्म्य है अन्न लकड़ी वगैरह सब तेज भाव से मिलते हैं। सदावर्त श्रीमान जयरामदास भागचन्द धामण गांव मुल्क बराड़ वाले का तथा पञ्चायती क्षेत्र से आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तो० चाय ६ माशा गुड़ ऽ- आप की धर्मशाला भी है, लागत ४०००) रु० और पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से १५००) रु०, सेठ जैनारायण जी की ओर से ३००) रु० और सेठ रामप्रताप जी नेमाणी की ओर से ३५१) रु० और ११००) रु० लागत की जमीन श्रीमान् सेठ जोखीराम जी जानकीदास सिंघानिया गङ्गासर-वालों ने क्षेत्र के लिए खरीदी थी इस जमीन पर धर्मशाला, आयुर्वेदिक औषधालय, राय बहादुर हजारीमल दूधवे वाले कलकत्ता निवासी की ओर से लागत ११०००) रु० का है। सदावर्त राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले का १० मूर्ति रोज का है और २०००) रु०में श्रीमान् सेठ सनेहीरामजी जवाहर-मल का विचार एक सड़क बनवाने का है जिस के बावत केदार-नाथ पुरी में पञ्चायती क्षेत्र के स्थान के सामने होकर ४८ वें मील से आगे पुरी तक बनाने की लिखा पढ़ी हो रही है। सरकार गवर्न-मेण्टने ६॥ नाली जमीन जो धर्मशाला के मुतसिल पर है अस्प-ताल का मकान बनाने के लिये दी है। ५०००) रु० श्रीमान् सेठ राय हजारीमल जी सोहनलाल कलकत्ते वालों ने नल के वास्ते दिये हैं। केदारनाथ जी के जगमोहन की मरम्मत सेठ कन्हैया-लाल जी खंडेलवाल गूँडा निवासी ने पञ्चायती क्षेत्र द्वारा करवाई है। दवाईखाना केदारनाथ जी में श्रीमान् सेठ हुक्मीचन्द जी हरदत्त राय रांचीवालों की ओर से है, दवाई मुफ्त दी जाती है। केदारनाथ की ऊंचाई समुद्र की सतह से ११००० फुट है। यहां बद्रीनाथ से अधिक ठंडा है। ४८ वें मील से आगे फर्शबन्दी

हो जाने से रेतकुण्ड और हँसकुण्ड की शोभा अधिक बढ़ गई है यह पुरी ६ महीने बर्फ से ढकी रहती है। दर्शन करके पीछे २३ मील नाला चट्टी तक उसी मार्ग से लौट आते हैं। केदारनाथ से वद्रीनाथ १०१ मील है।

नाला चट्टी से १॥ मील उतर कर मन्दाकिनी गङ्गा का पुल पार करके १॥ मील चढ़ाई चढ़ के ऊखीमठ मिलता है, जाड़ों में श्रीकेदारेश्वर की पूजा यहां ही होती है। यहां ऊषा, अनिरुद्ध और चित्ररेखा की मूर्ती हैं। ओंकारेश्वर का मन्दिर है, पोस्ट ऑफिस सफाखाना है। श्रीमान् रायबहादुर कस्तूरचन्द विश्वेश्वरदास डागा बीकानेर वाले की धर्मशाला लागत ४०००) रु० की है सदावर्त सेठ श्रीमान् जीवनराम जी शिवबक्स झाझरिया कलकत्ता निवासी की ओर से आटा ऽ॥ दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिर्च का है। पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश ने भी १०० हाथ लम्बी और ९ हाथ चौडी जमीन धर्मशाला के अन्दर खरीदी हुई है धर्मशाला की वड़ी जरूरत है और जमीन लेने की भी कोशिश हो रही है। आगे भी रास्ता कुछ दूर तक चढ़ाई का है। एक बटिया १८ मील द्वितीय केदार मध्यमहेश्वर को जाती है।

गणेशचट्टी—ऊखीमठ से ३॥ मील है रास्ता अच्छा है।

पोथीवासा—गणेश चट्टी से ५ मील। रास्ता चढ़ाई का है। यहां कुछ ठंड है, काष्ठ के सुन्दर वर्तन बनते हैं।

बनियाकुण्ड—पोथीवासा से २ मील है। यहां धर्मशाला के लिये कुछ जमीन बाबाजी के पञ्चायती क्षेत्र ने हासिल

कर रक्खी है जिस पर धर्मशाला श्रीमान् सेठ लच्छीराम जी बसन्तलाल दूधवे वाले नाथाणी कलकत्ता निवासी की ओर से बनेगी। यहां पर सदावर्त भी इन्हीं श्रीमान् की ओर से लगता है।

चोपता—बनियाकुण्ड से १ मील है। यहां से एक रस्ता २ मील तृतीयकेदार-तुङ्गनाथ को जाता है, चढ़ाई सख्त है, तुङ्गनाथ पर्वत के शिखर पर है। यहां धर्मशाला श्रीमान् सेठ जगन्नप्रसाद जी बैजनाथ दूधवे वाले नाथाणी कलकत्ता निवासी की लागत ५००००) रु० की है। सदावर्त भी इन्हीं श्रीमान् की ओर से आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तोला और नमक मिर्च का है। यहां फिर सड़क श्रीमान् सेठ राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले ने बनवाई है। दूसरी ओर से उतरकर चोपता से १॥ मील आगे पहिली सड़क में दर्शन करके आना होता है।

जंगल चट्टी—तुङ्गनाथ से ३ मील उतर कर भीमोड्यार तथा जंगल चट्टी है यह सीधी सड़क चौपता की आ गई है यहां से सघन जङ्गल शुरू है।

पांगरबासा—जङ्गलचट्टी से २॥ मील है रास्ता उतार का है। चोपता से यह चट्टी ४ मीलपर है।

मंडलचट्टी—पांगरबासा से ४ मील है। रास्ता उतारका है। बालखिल्या नदी पास बहती है, मैदान अच्छा है, धर्मशाला श्रीमान् सेठ रामचन्द्र जी कन्हैयालाल गोयन्दका की लागत

६०००) रु० की है । सदावर्त श्रीमान् सेठ शिवनारायण जी महादेव लाल हावड़ा वालों की ओरसे आटा ऽ॥और नमक का लगता है। यहांसे २ मील सिंघेना चट्टी है, रास्ता सीधा है

गोपेश्वर—मंडल से ४॥ मील है यहां वहुत प्राचीन मन्दिर और अष्टधातु का फरसा है रास्ता सीधा है । गोपेश्वर के पुजारी भी रावल पदवी से पुकारे जाते हैं, स्थान अच्छा है। यहां पानी के नल की जरूरत है ।

चमोली—गोपेश्वर से ३ मील उतराई उतर कर लाल सांगा है इसको चमोली भी कहते हैं, यहां डाकखाना, तारघर, शफ़ाखाना, अपर गढ़वाल की अदालत तथा तहसील भी है। धर्मशाला श्रीमान् सेठ रायबहादुर हजारीमल दूधवेवाले कलकत्ता निवासी की लागत ४०५०) रु० की है और श्रीमान् सेठ विसेसर लाल जी कसेरा बिसाऊ निवासी हाल कलकत्ता वाले की लागत ५०००) रु० की है। पानी की यहां बहुत कमी है, पुल बन गया है। यात्रा के समय प्याऊ बाजार के दोनों किनारों पर और सदावर्त श्रीमान् सेठ नन्दकिशोर जी श्रीराम झुन्झुनू वाले बिसाऊ निवासी हाल बम्बई वाले की ओर से आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तोला लकड़ी ऽ१ और नमक मिर्च का है । आते जाते दोनों समय दिया जाता है। दवाईखाना यात्रा के समय पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से खुलता है और दवाई मुफ्त दी जाती है रुद्रप्रयाग से जो सड़क सीधे बद्रीनाथ को जाती है वह भी यहां पर जा मिलती है। अब बद्रीनाथ यहां से ४८ मील रह गया है। ६ मील तक रास्ता सीधा है । रुद्रप्रयाग से चमोली तक के मार्ग का वर्णन पीछे करेंगे।

मठ—चमोली से दो मील मठ चट्टी है। पहिले आध मील की माली चढ़ाई, बाद को सीधा है।

छिनका--मठ से १॥ मील है।

सिय्यासैंण--छिनका से २ मील है। रास्ता सीधा, स्थान अच्छा है। मठ से पहिले १ मील छिनका है, और छिनका से १ मील बावला चट्टी है इससे कुछ आगे के सामने बिरही गङ्गा अलकनन्दा में मिलती है, बिरही ताल के टूटने से सम्वत् १९५१ में गङ्गाजी में भारी बाढ़ आई थी।

हाट--सिय्यासैंण से १ मील हाट चट्टी है। यहां से आधे मील पर अलकनन्दा का पक्का पुल है। इस पुल से आगे १ मील की खादी २ चढ़ाई है।

पीपलकोटी--हाट से दो मील है। चट्टी सुन्दर है, हुण्डी नोट आदि सब व्यवहार होते हैं। डाकखाना, डाक बंगला भी है। धर्मशाला की जरूरत है। सदावर्त सेठ मोतीलालजी राधा-किशन बागला कलकत्ता निवासी की ओरसे आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिर्च का है। धर्मशाला भी इन्हीं श्रीमान् जी की ओर से बनेगी, और प्याऊ पूर्णमल जी लाहोटी की ओर से है।

गरुड़गङ्गा--पीपलकोटी से ३॥ मील है। यहां गरुड़ जी की मूर्ति है। यहां स्नान दान करते हैं। यात्री ब्राह्मणों को पेड़े

और थाली दान देते हैं। श्रीमान् सेठ मोहनलाल रामचन्द्र डागा जलपाई गोडी वाले की धर्मशाला लागत ५०००) रु० की और सदावर्त आटा ऽ॥ और नमक का है।

टंगनी--यहां से १॥ मील है। रास्ता कुछ चढ़ाई का, बाकी सीधा है।

पातालगङ्गा--टंगनी से ३ मील है, रास्ता सीधा है।

गुलाबकोटी--पातालगङ्गा से दो मील है। रास्ता अच्छा है, स्थान भी अच्छा है, यहां एक इन्स्पेक्शन वंगला भी है।

कुम्हारचट्टी (हेलंग)--गुलाबकोटी से दो मील है। धर्मशाला सेठ रायबहादुर हजारीमल दूधवे वाले की लागत ४०००) रु० की और मरम्मतमें ६०००) रु० लागत और लगी है, और आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तोलाका सदावर्त और जलकी धारा भी धर्मशाला के सामने इन्हीं श्रीमान् की ओर से बनी है, लागत १५००) रु०। हेलंग के सामने अलकनन्दा जी के उस पार पञ्चम-केदार-कल्पेश्वर महादेव जी का मन्दिर और उरगम बद्री का मंदिर भी है। यहां एक धर्मशाला भी पञ्चायती क्षेत्र की उरगम में है, सब चीजें मिलती हैं। यहां कर्मनाशा गङ्गा बहती है।

(चतुर्थकेदार--रुद्रनाथ को रास्ता मण्डल चट्टी से जाता है।)

खनेटी--झड़कूला से २। मील है। यहां से आध मील नीचे ध्यान बद्री है।

झड़कूला—हेलंग से ३॥ मील है। रास्ता सीधा है।

जोशीमठ—खनेटी से १ मील है। धर्मशाला श्रीमान् पंडित गोपालशङ्कर वेनीशङ्कर जी भचेच अहमदाबाद वाले की लागत ७२००) रु० और १६०००) रु० इन्हीं श्रीमान् ने सदावर्त के लिये जमा कर रक्खे हैं जिस के सूद से ऽ॥ आटे का सदावर्त मिलता है। शीतकाल में ६ महीने बद्रीनाथ जी की पूजा यहीं होती है। यहां डाकखाना तारघर शफाखाना और बँगला भी है। नभ-गङ्गा दंडधारा का स्नान होता है, नृसिंह जी का दर्शन है। यहां-से ८ मील पर तपोवनमें गर्मजल के कुण्ड हैं और भविष्य बद्री है। यहां से एक रास्ता नीची घाटा होकर तिब्बत में कैलास को जाता है।

विष्णुप्रयाग--जोशीमठ से १॥। मील उतराई उतर कर है। विष्णुगङ्गा और अलकनन्दा का संगम है, विष्णुजीका मन्दिर है, बहाव तेज है, लोटों से स्नान करते हैं।

यहां से १ मील बलदौड़ा चट्टी है। यहां धर्मशाला श्रीमान् रामचन्द्र पन्नालाल डालमियां की लागत ९००) रु० और धर्मशाला सेठ हरनन्दराय फूलचन्द सर्राफ लछमनगढ़ निवासी की लागत ४२५) रु० की है।

घाट चट्टी--बलदौड़ा से ३ मील है, मार्ग सीधा, स्थान अच्छा है।

पाण्डुकेश्वर—घाट से १॥। मील है। योगबद्री का मंदिर सामने शिखर पर पाण्डव शिला है। धर्मशाला श्रीमान् रामरतन

गजाधर पोतदार नवलगढ़ वाले की लागत ४०००) रु० की और धर्मशाला में सदावर्त सेठ साधूराम जी तुलाराम खुरजा वाले की ओरसे आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च का है। यहां से पट्टू साधु, यात्रियों को ७ दिन के लिए दिये जाते हैं जो कि वापसी में फिर वापिस लिये जाते हैं।

पांडुकेश्वर से १॥ मील पर शेषधारा में वैष्णव आश्रम है।

लामबगड़--शेषधारा से १ मील लामबगड़ है। यहां धर्मशाला श्रीमान् रामचन्द्र पन्नालाल डालमियां चिड़ावा निवासी पन्नालालजी की माताजी ने बनवाई लागत १२००) अब बिल्कुल टूट गई है, बनवाने की जरूरत है। दूसरी धर्मशाला श्रीमान् रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्द विश्वेश्वरदास डागा बीकानेर निवासी की लागत २०००) रु० इस धर्मशाला को दो मंजला करने की ज़रूरत है. इन्हीं श्रीमान् का सदावर्त भी लगा है, आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला लकड़ी और नमक मिर्च वापिस आते मिलता है।

हनुमान चट्टी--लामबगड़ से ३॥। मील हनुमान चट्टी है। धर्मशाला, महावीरजी का मंदिर, एकाजी मोतीजी मन्दसौर निवासी ने बनवाया लागत ७००) रु० श्रीमान् सेठ जेठा भाई बूलचन्द मालिक 'अमरचन्द माधो जी कम्पनी' कलकत्ता निवासी ने धर्मशाला लागत २५००) की बनवाई दूसरी धर्मशाला श्रीमान् सेठ रूढ़मल जी सागरमल आलमाल भिवानी वाले की लागत १०००) रु० सेठ हरदयालजी रघुनाथ प्रसाद कानोड़िया राजगढ़ निवासीकी लागत ५००), माई अशरफी सेठकरोड़ीमल जी के घर

से भिवानी लागत ५००), माई लक्ष्मी धर्मपत्नी सेठ लादूराम जी काडयां भिवानी लागत २००) सेठ मुर्लीधर जी की धर्मपत्नी माई जडिया मदनचन्दजी दीपचन्द बम्बई निवासी की लागत २००) सेठ गोयन्दका चुरू निवासी लागत१००),पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओरसे जमीन खरीदी गई थी लागत ७००) और बनवाने पर १४००) लागत लगी है। यहां पाण्डवों का यज्ञ हुआ था उस यज्ञके होम किये हुए जौ निकलने लगे हैं, अब भी यात्रीलोग होम करते हैं। मन्दिर प्राचीन है, सदावर्त श्रीमान् सुगनचन्द गोविन्द राम बीकानेर निवासी की ओर से चाय ६ माशा व १ छटांक गुड़ जलपान के वास्ते मिलता है।

यहां से १ मील घोरसिल पुल। घोरसिल पुल से १ मील रडंग पुल। इस पुल से १ मील कांचनगङ्गा है, रास्ता चढ़ाई का है। कांचनगङ्गा के वार पार दो धर्मशालाओं की जरूरत है क्योंकि वर्सात में बाढ़ आने पर यात्रियों को बहुत तकलीफ होती है।

यहां से ॥ मील देवदेखनी हैं। यहां से श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर के दर्शन होते हैं। आध मील पर आगे अलकनन्दा का पुल है इस को श्रीमान् रायबहादुर भगवानदास बागले की धर्मपत्नी ने बनवाया लागत ४२००) रु०। और मरम्मत के लिये सरकार में ५००), जमा थे यह पुल अब दुबारा बनाया गया है।

श्रीबद्रीनाथ पुरी—देवदेखनी से पौण मील है। भनवान्जी की विशाल मूर्ति है। मन्दिर विशाल है। तप्तकुण्ड पास है तप्तकुण्ड की छत्री श्रीमान् मोहनलाल शिवचन्दराय कलकत्ता निवासी की ओर से लागत २५००) की बनी है। धर्मशाला श्रीमान रामजीदास किशोरीलाल जटिया कलकत्ता निवासी की

लागत २०००), श्रीमान हरसुखराय कन्हैयालाल का औषधालय लागत ५००), पञ्चायती दवाखाना भी खुला है जिस में ३००) श्रीमान सेठ हुक्मीचन्द जी हरदत्तराय रांची वालों की ओर से खर्च होता है दवाई मुफ्त दी जाती है, श्रीमान शाह गङ्गाप्रसाद जी गोपीकिशन लखनऊ वालों की धर्मशाला लागत ६५०) रु० ।

श्रीमान गिरधारी लाल, जयनारायण बागड़िया जलगांव निवासी ने लक्ष्मी जी का मन्दिर मरम्मत कराया था, लागत ११००) ब्रह्मकपाली का फर्श और धर्मशाला श्रीमान हनुमानदास गजाधर नवलगढ़ वाले ने बनवाया लागत २०००) हवन कुण्ड की मरम्मत सेठ अमरचन्द जी कन्हैयालाल चमड़िया रतनगढ़ वालों की लागत १५०) श्रीमान डिप्टी हरनारायण जालंधर निवासी सीढ़ी की लागत २५०) श्रीमान भूधरमल चण्डीप्रसाद की धर्मशाला लागत ६०००) और ऋषिगङ्गा पर श्रीमान रामचन्द्र पन्नालाल डालमियां की धर्मशाला लागत १२५०) श्रीमान जमना दास जीतमल पोद्दार की धर्मशाला लागत ५०) अब टूट गई। श्रीमान रामप्रसाद चिम्मनलाल गनेड़ी वाले की धर्मशाला लागत २०००) अब टूट गई । श्रीमान ठाकुर जमनाधर जीवराज मुम्बई निवासी की धर्मशाला लागत १०००) अब टूटगई । श्रीमान भगवानदास लक्ष्मीनारायण शुकदेवदास तहसील दोरिया निवासी ने रास्ता सुधरवाया लागत १५०) श्रीमान् जमनाधर जीतमल पोद्दार नागपुर निवासी की ओर से सदावर्त आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तो० चाय ६ माशे गुड़ ऽ~ लकड़ी ऽ ॥। और नमक का है। श्रीमान् पण्डित चैतराम गोपीचन्द पतन कोहाला की ओर से ऽ५ खिचड़ी और श्रीमान नानकराम जगन्नाथरंगून निवासी की ओर से भोजन २१ मूर्तियों का रोजाना मिलता है ।

श्रीमान् सेठ जीवनरामजी सन्तलाल लोहला रंगून निवासी की ओर से १० मूर्तियों का भोजन रोज।

आतुरालय-सेठ भगवानदास भजनलाल चौधरी कानपुर निवासी की ओर से लागत २०००), धर्मशाला सेठ मायाराम जी हरीराम डागा पीपलखुंटा बराड़ लागत २३८०) धर्मशाला सेठ रामचन्द्र जी कन्हैयालाल गोयन्दका खुरजा निवासी की लागत ३७००) अभी दिये नहीं पञ्चायती क्षेत्रसे लगते रहें। सेठ रामचन्द्र रामनाथ लाहोटी जसवन्तगढ लागत ३५०) रु० माई सन्तकौर हृषीकेश निवासी ४००) श्रीपुरी के सामने नर पर्वत के नीचे क्षेत्र की ओर से योग्य महात्माओं के लिये कुटिया इस भांति बनी है और कुटियों की भी बड़ी जरूरत है। २ कुटियां पञ्चायती क्षेत्रकी ओर से लागत ७००) रु० की और सेठ हरजीवनलाल बालकिशनदास कानपुर निवासी की ओर से लागत ५००) रु० हरनामलजी की ओर से लागत ३५०) सेठ गीलूमलजी मिजूमल हाथरस निवासी की ओर से कुटिया १ लागत ५००) रु० सेठ बिहारीलाल जी खुशीराम लायलपुर निवासी की ओर से लागत ९००) सेठ अमरचन्दजी कन्हैयालाल चिमड़िया रतनगढ वालों की ओर से लागत ५००), भाई किशनदासजी करांची निवासी की ओर से लागत ४००) रु०। श्रीमान् सेठ जीवराजजी पोद्दार हींगणघाट निवासी की ओर से १) रु० रोजाना खिचड़ी के वास्ते। श्रीमान् रामलालजी ओंकारमल चोखानी मारग्रीटा आसाम निवासी की ओर से भोजन ५ मूर्तियों के लिए रोजाना। श्रीमान् राय देवीदत्त जी की धर्मशाला बनी है। हजारीमलजी दूधवे वाले नाथाणी की ओर से लागत ६०५१) रु०।

श्रीमान् सेठ फतेहचन्द जी मुर्लीधर हिम्मतसिंह कलकत्ते निवासी की ओर से मकान पाठशाला लागत १०००) श्रीमान् मोहनलाल लक्ष्मीनारायण सर्राफने शफाखाना के वास्ते २ हजार रुपये दिये, बाकी रुपये सर्कार ने लगाये । श्रीबद्रीनाथ जी के मन्दिर की टीप सेठ हीरालाल रामगोपाल गंडेरी वाले फतेहपुर निवासी ने कराई लागत ५०००) रु०, और जगमोहन नये सिर से रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्द बिश्वेश्वरदास डागा बीकानेर निवासी की ओर से बनाया गया लागत ५००००) रु० ।

बाबा काली कमली वाले पञ्चायती क्षेत्र के खर्च से गोशाला बनी थी लागत १२००) अब टूट गई है । और भी कई धर्मशाला हैं।

पुरी बद्रीनाथ में श्रीबद्रीविशाल जी के दर्शन कर यात्री कृत-कृत्य हो जाते हैं । मन्दिरमें दर्शनः—बीच में श्री बद्रीविशाल जी हैं, दाहिनी ओर कुबेर और गणेश जी हैं, बाँई ओर श्री लक्ष्मी जी तथा नर-नारायण ऋषि हैं, आगे उद्धव जी, नारद जी और गरुड़ जी हैं । भूदेवी व लीलादेवी की छोटी २ मूर्तियां भी नरनारायण भगवान् के पास ही में हैं ।

बाहर परिक्रमा में दाहिनी ओर भोगमण्डी तथा लक्ष्मी जी का मन्दिर है, बांई ओर पुरी के रक्षपाल घण्टाकर्ण जी हैं ।

बद्रीकाश्रम के तीर्थ ।

(१) पञ्चशिला—नारदशिला, नृसिंहशिला, बाराह-शिला, गरुड़शिला और कुबेरशिला है ।

(२) पञ्चतीर्थ—वह्नितीर्थ (तप्तकुण्ड), प्रह्लादकुण्ड, नारद, कूर्मधारा और ऋषिगङ्गा (लक्ष्मीधारा) है ।

(३) चरणपादुका, शेषनेत्र, वेदधारा, मातामूर्ति, व्यास-गुफ़ा, गणेशगुफ़ा और भीमशिला भी दर्शनीय हैं।

(४) वसुधारा--बद्रीनाथ से ४ मील आगे है। माना गांऊं होकर जाते हैं, रास्ता अच्छा है, बड़ी सुवह को जाना चाहिये शाम को बादल छा जाते हैं इस कारण कुछ भी दृश्य नजर नहीं आता है।

मंदिर में दर्शन बड़े सावधानी से करने चाहियें, स्थान संकुचित है और भीड़ बड़ी रहती है। पहिली शाम को अटका लिखवा कर दूसरे दिन १२ बजे से पहिले २ भोग ले लेना चाहिये।

पञ्चबद्री--(१) आदबद्री (करणप्रयाग से ११ मील पूरव है), (२) बिशालबद्री (श्री बद्रीनारायण), (३) भविष्यबद्री (जोशीमठ से ८ मील आगे तपोवन में है, वहां दो २मीलके फ़ास्ले पर गरम जल के सोते भी हैं) (४) योगबद्री (पाण्डुकेश्वर में) (५) ध्यानबद्री, जोशीमठ से १ मील नीचे है।

सत्यपथ यात्रा।

बद्रीनाथ से १३ मील है।

यह मार्ग केवल आषाढ़ और श्रावण मास में खुलता है। बद्रीनाथ से आगे दो मील तक सीधा है। फिर ५मील कुछ कठिन मार्ग से चलकर लक्ष्मीवन तथा अलकनन्दा नदी का अल्कापुरी से बर्फ के अन्दर ही अन्दर आने के पश्चात् सब से पहिले भूमण्डल

में प्रवाह स्वरूप में प्रकट होने का अच्छा मनोरञ्जक और चित्ता-कर्षक दृश्य है। इस से आगे कुछ और विकट मार्ग से होकर ४ मील की चढाई चढ़कर नर-नारायण पर्वत से गिरती हुई शत धाराओं का दर्शन करते हुए चक्रतीर्थ पहुँचते हैं। यह बर्तुलाकार का बहुत बडा मैदान है। यहां पहुँचते ही चित्त प्रकृति देवी के सौन्दर्य की पराकाष्ठा को प्राप्त कर ऋषि भावों को अनुभव करता है। और इस निर्जन स्थान में भी चित्त स्वतःस्थायी निवास करने को चाहता है। फिर सीधी आध मील की चढ़ाई चढ़ कर सामने के बड़े पत्थर के समीप पहुंचना पड़ता है, वहां से १॥ मील सीधे पश्चिम की ओर चल कर (बर्फकी बांकों पर से होकर चलना पड़ता है) सामने काले पहाड़ की तरेटी में सत्य-पथ (सतोपन्थ) सरोवर १॥ मील के घेरे का त्रिकुटी के आकार का शुद्ध, निश्चल, निर्मल, जलपूर्ण है। इससे आधे मील आगे चन्द्रकुण्ड, चन्द्रकुण्ड से १ मील आगे सूर्य्यकुण्ड है। सामने हिमालय के शृङ्गों की श्रणी सीढ़ियों की तरह दिखलाई देती है जिसे स्वर्गारोहण कहते हैं। वास्तव में यह स्थान स्वर्ग तुल्य ही है और यदि शीत न सतावे तो साक्षात वैकुण्ठ ही प्रतीत होवे।

चक्र तीर्थ से प्रातःकाल जाना चाहिये। वहां लकडी नहीं होती है, साथ में खटाई बनाया हुआ शुष्क भोजन, ले जाना चाहिये। टिकने के लिये गुफ़ाएँ हैं, किन्तु वे वर्षा में टपकती भी हैं।

मानसरोवर और कैलास यात्रा--के लिए एक मार्ग मानाघाटासे होकर भी जाता है। पहिले क़रीब ५।७ दिनका बहुत

बड़ा विकट मार्ग है इसके बाद एक तिब्बती गांऊं दाब्बा नाम का मिलता है। यहां भी सब प्रकार की सामग्री मिलती है। इसके आगे मार्ग सीधा और अच्छा है बैल की सवारी भी मिलती है। दाब्बा से दो दिन के बाद दम्पुम् गांऊं मिलता है। दम्पुम् से दो दिन के बाद शिवचिलिंग मिलता है। शिवचिलिङ्ग से दो दिन के बाद ज्ञानिमा मण्डी मिलती है। यह बडी मण्डी है सब प्रकार की वस्तुएँ यहाँ मिलती हैं। ऊन और पश्मीने के अच्छे २ वस्त्र भी मिलते हैं। ज्ञानिमा मण्डी से दो दिनके बाद तीर्थपुरी और तीर्थपुरी से २ दिन के बाद कैलास पर्वत मिलता है। जो कि श्रीगौरीशङ्कर जी का निवास स्थान है। इस की बनावट बिल्कुल मन्दिर की सी है, कैलास की परिक्रमा २५ मील के क़रीब है जिसमें कि क़रीब २। ३ दिन लग जाते हैं कैलास से पूरब दक्षिण की ओर क़रीब ३० मील पर मान सरोवर है। जिस की परिक्रमा तिब्बती लामाओं के मत से ७० मील के क़रीब है और अंग्रेजी आविष्कारकों के मत से ४५ मील है। यह निर्मल और गम्भीर, जल से परिपूर्ण अत्यन्त शोभायमान ताल है। मानसरोवर से तकलाकोट लीपूलेख घाटा होकर अल्मोड़ा को वापिस आते हैं। इन दृश्यों का सुख तो देखने ही से जाना जा सकता है, वाणी तथा लेखनी से अकथनीय है।

वापसी यात्रा।

श्रीबद्रीनाथ जी के दर्शन कर यात्री ४८ मील चमोली तक उसी मार्गसे लौट आता है। नीचे लिखी चट्टियां मार्गमें पड़ती हैं।

बद्रीनाथ से हनुमानचट्टी	४	मील	०	फर्लांग
हनुमानचट्टी से पांडुकेश्वर	६	"	७	"
पांडुकेश्वर से घाट चट्टी	२	"	६	"
घाट चट्टी से विष्णुप्रयाग	४	"	१	"
विष्णुप्रयाग से जोशीमठ	१	"	६	"
जोशीमठ से हेलंग	६	"	६	"
हेलंग से गुलाबकोटी	२	"	०	"
गुलाबकोटी से टंगनी	५	"	१	"
टंगनी से गरुड़गङ्गा	१	"	४	"
गरुड़गङ्गा से पीपलकोटी	२	"	४	"
पीपलकोटी से सियासैंण	३	"	०	"
सियासैंण से मठ	४	"	६	"
मठ से चमोली	२	"	०	"

कुहेड़ चट्टी--चमोली से दो मील है, मार्ग सीधा है।

मैठाणा--कुहेड़ चट्टी से दो मील है। चमोली से रुद्रप्रयाग के दो मील आगे तक ४१ मील मार्ग सीधा और अच्छा मनोरञ्जक है।

नन्दप्रयाग--२ मील है वस्ती रम्य है, अलकनन्दा और मन्दाकिनी का संगम है। पानी की धारा श्रीमान् गणपतराय खेमका ने मंगवायी है लागत ९००) रु० परन्तु टूट गई है, नल भी वस्ती वालों ने इधर उधर कर दिये हैं और सदावर्त श्रीमान् सेठ बिशेश्वर जी चूरू निवासी की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी। तोला और नमक मिर्च का है।

सोनला चट्टी—नन्दप्रयाग से २ मील। पानी कम है। इन्स्पेक्शन बंगला है।

लंगासू--सोनला से ३ मील है । यहां धर्मशाला की जरूरत है।

जैकंडी—लंगासू से दो मील है।

उमट्टा--जकंडी से दो मील है।

कर्णप्रयाग—उमट्टा से ३॥ मील है । देवी का प्राचीन मन्दिर है। पिंडर गङ्गा और अलकनन्दा का संगम है। पानी की धारा श्रीमान् सेठ विष्णुदयाल हरदयाल सुरेका ने मंगवायी है लागत ६००) रु० । यहां शफाखाना, तारघर, डाकखाना और बंगला भी है। धर्मशाला श्रीमान ललिता प्रसाद हरप्रसाद की लागत ७०००) रु० इन्हीं का सदावर्त भी है। सदावर्त, आटा॥~ दाल ऽ~ घी १ तोला और नमक का है। यहां कर्ण महाराज ने बड़ा यज्ञ किया था वहां से वापिस होने के लिये दो रास्ते हैं। एक तो ऋषिकेश का नीचे लिखे भांति है (और दूसरा रामनगर काठगोदाम होकर जाता है)।

चटुवा पीपल—करणप्रयाग से ४ मील। यहां धर्मशाला की जरूरत है। चटुवा पीपल से दो मील गौचरसैंण है।

कमेड़ा--गौचरसैंण से ४ मील है।

शिवानन्दी--कमेड़ा से ३॥ मील है। स्थान अच्छा है।

रुद्रप्रयाग—शिवानन्दी से ७ मील। **रुद्रप्रयाग से ऋषिकेश ८१। मील है।** इस मार्ग के वर्णन के लिए पृष्ठ १८ से ३५ तक देखो।

दूसरा वापिसी मार्ग—करणप्रयाग से रामनगर ९६॥ मील है।

सिमली--करणप्रयाग से ४ मील है। मार्ग सीधा है, यहां एक सदावर्ति धर्मशाला है

सिसरौली--सिमली से दो मील है। मामूली चढ़ाई है।

भटोली--सिसरौली से १॥ मील है। यहां से कुछ दूर चांदपुर गढ़ी का पुराना किला है।

आदबदरी--भटोली से ४ मील। यहां आदि बदरी का मन्दिर है, जल झरने का पीना चाहिये और स्नान नदी में करना चाहिये। धर्मशाला की जरूरत है।

खेती—यहां से ३। मील है कठिन चढ़ाई है।

जोंकापानी--खेती से १॥ मील है, चढ़ाई है। धर्मशालाके लिए जमीन पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश ने गवर्नमेंट से ले ली है।

दिवालीखाल—यहां से दो मील है। जमीन सर्कार से लेली गई थी जिसपर प्याऊकी कुटिया श्रीमान् सेठ रामगोपालजी

जगन्नाथ खण्डेलवाल नवलगढ़ निवासी की ओर से लागत ५००) रु० लगी है प्याऊ भी इन्हीं श्रीमान् की ओर से लगती है। धर्मशाला भी बनेगी।

ग्वाड़ गधेरा—यहां से ४॥ मील है। रास्ता उतार का है।

धुनारघाट—ग्वाड़ से १। मील है। रामगङ्गा पास बहती है, डाकखाना और पुलिस चौकी भी है। धर्मशाला की जरूरत है।

मेलचौंरी—धुनारघाट से ५ मील। यहां पर कुली बदले जाते हैं। इधर के झंपान कुली, कण्डी वाले यहीं तक जाते हैं आगे के लिये दूसरे करने पड़ते हैं। यहां घोड़ों की सवारी मिलती है जल झरने का पीना होता है आगे चढ़ाई है, धर्मशाला की बडी जरूरत है। यह स्थान बद्रीनाथ से ९६ मील और करण-प्रयाग से २८॥ मील है।

गणांई (चौखुटिया)—मेलचौंरी से ९॥ मील है। यहां रामगङ्गा में पुल लोहे का पक्का बना है। यहां पर धर्मशाला, डाकखाना, डाकबंगला, सर्कारी चौकी और शफाखाना है। यहां से एक सड़क रानीखेत अल्मोड़ा को चली गई है। दूसरी सड़क रामनगर को सीधी चली गई है।

गणांई से रामनगर को:—

यहां से सीधा दो मील भटकोट। दो दुकान हैं, जल पास है। भटकोट से एक मील भगोती चट्टी है, आध मील पर पानी का झरना है।

त्याड़--चौखुटिया से ४॥ मील है इस को गणेशचट्टी भी कहते हैं। धर्मशाला बच्चीराम दुकानदार अल्मोड़े वाले की आम का बगीचा, पानीकी बावड़ी पास है, सदावर्त एक माह का जमन सिंह मालगुजार का है, आटा ऽ॥ दालऽ- घी पैसा भर ।

त्याड़ से आध मील पर नर्मदेश्वर महादेव का मन्दिर रामगङ्गा के पास है । यहां धर्मशाला लालसिंह झुड़गा वाले ने बनवाई है ।

मासी--यहां से २। मील । यहां पर धर्मशाला की जरूरत है। डाकखाना है, पानी रामगङ्गा का पास है ।

बूढ़ाकेदार--मासी से ४ मील। रामगङ्गा पास है,गङ्गा पार कर यात्री बूढ़ाकेदार के दर्शन को जाते हैं।

नालाचट्टी--बूढ़ाकेदार से ३॥ मील । पानी की बावड़ी गङ्गा जी के पास और एक छोटी धर्मशाला सीताराम साधू ने बनवाई।

भिकियासैंण--यहां से ३ मील । रामगङ्गा, गंगेश्वरी, नर्मदेश्वरी का संगम है, यहां डाकखना और सर्कारी धर्मशाला है। गङ्गापार करनी होती है धर्मशाला की जरूरत है ।

श्रीकोट--भिकियासैंण से ३ मील । यहाँ जल नहीं है प्याऊ की जरूरत है यहां से गाड़ी की सड़क शुरू होती है ।

बासोट—श्रीकोट से दो मील। पानी पास है।

ग्वीलखान—बासोट से ३॥ मील। छोटी सी धर्मशाला बचुली ब्राह्मणी की है। पानी सड़क से दो जरीब नीचे है किन्तु रास्ता बहुत खराब है।

गूजरघाटी—ग्वीलखान से ३ मील। कुछ चढाई है जल और जगह का बड़ा दुःख है यात्री लोग पानी मोल मँगा कर अपनी गुजर करते हैं। यहां पर बैलगाड़ी व सवारी करने को घोड़ा भी मिल जाता है रास्ता सीधा है।

मछोड़ (कपूरनौली)-यहां से ३ मील है। एक दुकान है जल बिल्कुल नहीं, सड़क से नीचे उतर कर जल मिलता है रास्ता खराब है।

पनवाधोखन--कपूरनौली से दो मील। यहां पर पानी पास है। एक छोटी सर्कारी धर्मशाला है।

गोदीचट्टी--धोखन से दो मील। नल का पानी पास है, नल सरकारी है, धर्मशाला भी है।

टोटाआम—गोदी से ६ मील। पानी पास, एक सरकारी धर्मशाला है।

सौरालचट्टी—टोटाआम से दो मील, पानी पास है।

कुमरियाचट्टी—सौराल से ३ मील । यहां पर पानी कोशी नदी का आता है पानी आध मील पर है, रास्ता खराब है, प्याऊ की जरूरत है।

मोहन चट्टी—कुमरिया से ३ मील है । पानी कोशी नदी के पास सर्कारी डिग्गी का है।

गरजिया चट्टी--मोहन चट्टी से ५ मील है।

रामनगर—गरजिया से ८ मील है। यहां पर सब चीज मिल जाती हैं। यह बड़ा बाजार है, यह रेल्वे स्टेशन है यात्री रेल में बैठ कर अपने घरों को पधारते हैं । रामनगर में आराम के लिये खास धर्मशाला कोई नहीं है, एक छोटी सी धर्मशाला रामचन्द्र जी के मन्दिर के पास है, वह बेमरम्मत पड़ी है कोई ५० आदमी रामचन्द्र जी की परिक्रमा में ठहर सकते हैं । जल कोशा नदी का पीते हैं, पेड़ों के नीचे बैठना और रसोई बनाना होता है, यात्रियों को बड़ी तकलीफ है, धर्मशाला की बड़ी जरूरत है।

गणांई से काठगोदाम।

गणांई से एक मार्ग रानीखेत होकर काठगोदाम को भी जाता है। इस में निम्नलिखित स्थान पड़ते हैंः-

गणांई से महाकालेश्वर ४ मील
महाकालेश्वर से द्वाराहाट ६ मील

द्वाराहाट से चन्द्रेश्वर	३ मील
चन्द्रेश्वर से कफड़ा	४ मील
कफड़ा से गग्गास	४ मील
गग्गास से कोटली	३ मील
कोटली से रानीखेत	२ मील

रानीखेत से मोटर मिल जाती है और मोटर से काठगोदाम को चले जाते हैं।

नोटः—वापसी के मार्ग तो बहुत से हैं किन्तु इन सब में सुगम और सुलभ मार्ग हरिद्वार ऋषिकेश का ही है। क्योंकि कुली कण्डी वगैरह करने में सहूलियत रहती है और कम खर्च पड़ता है, रास्ते में चढ़ाई कम पड़ती है, मार्ग देखा हुआ रहता है, और शास्त्रानुसार उत्तराखण्ड के तीर्थः—यमनोत्री, गङ्गोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा हरिद्वार ऋषिकेश से आरम्भ कर फिर वापिस ऋषिकेश—हरिद्वार को ही लौट आने से पूरी यात्रा और परिक्रमा होती है।

श्रीनगर से कोटद्वार ५९ मील है।

बद्रीनाथ से श्रीनगर १०६ मील है और श्रीनगर से कोटद्वार रेल्वे स्टेशन ५९ मील है। इसमें निम्नलिखित पडाव हैः—

श्रीनगर से पौड़ी ८ मील। पौड़ी से अध्वानी १० मील। अध्वानी से कलेथ ९ मील। कलेथ से बांघाट ३ मील। बांघाट से द्वारीखाल ७ मील। द्वारीखाल से डाडामण्डी ६ मील। डाडामण्डी से दुगड्डा ६ मील। दुगड्डा से कोटद्वार १० मील है

किन्तु यात्रियों के लिये यह मार्ग उपयुक्त नहीं है कारण कि इस मार्ग में चट्टियां नहीं हैं और चढ़ाव उतार बहुत है ।

गङ्गोत्री यमनोत्री यात्रा ।

ऋषिकेश से देवप्रयाग होकर यमनोत्री १५२ मील है। ऋषिकेश से देवप्रयाग (४४ मील) तक के मार्गका वर्णन पहिले पृष्ठ ३० से पृष्ठ ३५ तक हो चुका है । देवप्रयाग से आगे एक मार्ग सीधे बद्रीनाथ को जाता है और दूसरा अलकनन्दा भागीरथी को पार कर भागीरथी के किनारे २ यमनोत्री गङ्गोत्री को जाता है।

खर्सांड़ा—देवप्रयाग से १० मील है । रस्ता मामूली चढ़ाव उतार का है, स्थान अच्छा है।

कोटेश्वर—खसांडा से ४ मील है । यहां महादेव जी का दर्शन है।

बन्डूचा-कोटेश्वर से ६ मील है। स्थान अच्छा है ।

क्यारी—बन्डूचा से ८ मील है ।

टिहरी—क्यारी से ६ मील है यह भागीरथी और भिलङ्गना के सङ्गम पर ता० २७ दिसम्बर १८१९ को हिज हाईनेस महाराजा साहब सुदर्शन शाह जी द्वारा समुद्र की सतह से २९०० फुट

ऊँचाई पर बसाई हुई अत्यन्त रमणीक राजधानी है। यहां बद्रीनाथ और केदारनाथ जी के विशाल मन्दिर हैं। यहां से ९ मील उत्तर की ओर (समुद्र की सतह से ७९०० फीट की ऊँचाई पर) सन् १८७७ में हिज हाईनेस महाराजा साहब प्रताप शाह जी द्वारा बसाई हुई प्रताप नगर नाम की (समर रेजिडेन्स) दिव्य नगरी है, और ३० मील पूर्व सन् १८९६ में हिज हाइनेस महाराजा साहब सर कीर्तिशाह बहादुर के० सी० एस० आई० द्वारा बसाया हुआ कीर्तिनगर नाम का शहर श्रीनगर के पास अलकानन्दा के किनारे पर है। एवं दक्षिण की ओर ४० मील की दूरी पर वर्तमान नरेश मेजर हिज हाइनेस महाराजा सर नरेन्द्र शाह बहादुर के० सी० एस० आई० सी० एस० आई० द्वारा सन् १९२० में बसाई हुई नरेन्द्र नगर नाम की नवीन राजधानी (विंटर रेजिडेन्स) है।

टिहरी से (भिलङ्गनी नदी के किनारे २ होकर) केदारनाथ करीब ७० मील है यमनोत्री ७४ मील, गङ्गोत्री १०० मील, और मसूरी ४० मील है।

पीपलचट्टी–(सराई) टिहरी से ५॥ मील है। मार्ग सीधा है।

भल्डियाना–सराई से ६ मील है। स्थान अच्छा है। मार्ग सीधा है। यहां धर्मशाला श्रीमान् रामकृष्ण भगवानदास की लागत ५००) रु० और धर्मशाला श्रीमान् शिवरामजी उदमी-राम की लागत १०००) रु० और श्रीमान् गुलाबराय केदारमलकी लागत ६००) रु० की है और नेतराम जी गुड्स क्लर्क जयपुर वाले

की तर्फ से धर्मशाला के लिये २००) रु० । पानी का नल लगने-वाला है आध मील नीचे, गङ्गाजी बह रही है। यहां सदावर्त सेठ ललताप्रसादजी शान्ताप्रसाद मुरादाबाद वालों की ओरसे आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिर्च का है।

छाम—भल्डियाना से ५ मील है, यहां पर एक अच्छी बड़ी धर्मशाला है।

नगून—छाम से ५ मील है। स्थान अच्छा है नदी पास ही है। धर्मशाला श्रीमान् रामकृष्ण भगवानदास की लागत ५००) और श्रीमान् ला० दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की लागत २५०) रु० जो अब गिर गई है।

धरासू—नगून से ५ मील है। धर्मशाला श्रीमान् खेतसीदास हरसुख राय रुइयां की है लागत ५००) और ५००) पञ्चायती क्षेत्र की ओर से और ५०००) रु० सेठ सागरमल जी रामस्वरूप गोयन का खुर्जा निवासी की ओर से और श्रीमान् शिवदयाल सूर्यमल बाजोरिया का सदावर्त आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिलता है। इन्हीं की तरफ से एक मकान रसोई का बनाया गया है लागत ३००) रु० यहां और एक धर्मशाला सेठ तुलाराम जी गौरीशङ्कर गोयन्दका की लागत ५०००) रु० की है।

कल्याण—धरासू से ४. मील है। पहिले पाव मील की चढ़ाई और पौन मील सीधा है फिर आध मील की चढ़ाई व आध मील की उतार है, और फिर दो मील तक सीधा मार्ग है। इस मार्ग में पानी का बड़ा अभाव है प्याऊ की जरूरत है।

बरमखाला—(गेंउला) कल्याणी से ५ मील है। मार्ग सीधा है। यहां पर एक दुकान है।

सिलक्यारी—गेंउला से ५ मील है। मार्ग सीधा है। यहां पर धर्मशाला श्रीमान् सेठ मोहन लाल जी रामचन्द्र डागा जलपाईगोडी वालों की धर्मपत्नी रामचन्द्र जी की माता की ओर से २५००) रु० लागत की बन रही है। चट्टी से आगे चढ़ाई शुरू होती है, सड़क के रास्ते जाना चाहिये "पगडंडी" का मार्ग बहुत कठिन है इस मार्ग में प्याऊ की जरूरत है।

राडीधार—(खाला) सिलक्यारी से ५ मील है। यहां से एक सड़क बड़कोट चकरौता को जाती है और एक बटिया उत्तरकाशी को जाती है। यहां पर कोई चट्टी. नहीं है यहां से आगे मामूली उतार है, जो कि ३ मील तक लगातार चली गई है।

डंडाल गांऊं—राड़ीकी धार से दो मील है। यहां तक पानी नहीं है बीच में एक प्याऊ की जरूरत है।

सिमली—डण्डालगांऊं से दो मील है। वापसी में इसी चट्टी से एक रास्ता उत्तरकाशी को जाता है।

गङ्गाणी—सिमली से दो मील है। यहां पर धर्मशाला सेठ गौरीशङ्कर जी गोयन्दका की ओर से बनने वाली है। जमुना

जी के किनारे एक कुण्ड है जिस को गङ्गाजी का जल कहते हैं। सदावर्त श्रीमान् सेठ खेमराज जी श्रीकृष्णदास जी के सुपुत्र रङ्गनाथ जी और श्रीनिवास जी मालिक श्रीवेङ्कटेश्वर मुद्रण यन्त्रालय बम्बई वालों की ओर से आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तोला और नमक मिर्च का है। जमुना जी पास ही में बहती है।

जमुनाचट्टी—गङ्गाणी से ६ मील है। यहां पर सदावर्त श्रीमान् सेठ खेमराज जी श्रीकृष्णदास जी के सुपुत्र रायबाहिब रङ्गनाथ जी और श्रीनिवास जी मालिक श्रीवेङ्कटेश्वर मुद्रणयन्त्रालय बम्बई वालों की ओर से आटा ऽ॥ दाल ऽ घी १ तोला और नमक मिर्च का है यहां पर पक्के पुल की जरूरत है। यहां से आगे कुछ दूर तक मार्ग सीधा है।

ओजरी चट्टी—जमुनाचट्टी से २ मील है। यही घाटी ठीक अलकनन्दा की पाण्डुकेश्वर वाली घाटी की तरह मनोरञ्जक है। एक मील की चढ़ाई, बाकी सीधा है।

डडोटी—ओजरी चट्टीसे २॥ मील है। दो मील सीधा फिर पुल को पार करके आध मील की चढ़ाई है, इस पुल को भी पक्का बनाया जाना अत्यावश्यक है।

राना गांऊं—डडोटी से दो मील है, आध मील की चढ़ाई और डेढ़ मील सीधा है।

हनुमान चट्टी—रानागांऊँ से दो मील है। मार्ग सीधा है हनुमान गङ्गा का पुल पार करना होता है। धर्मशाला श्रीमान्

सेठ परमानन्द जी भाटिया देहराइस्माइलखां वालों की ओर से बनी है।

खरसाली—हनुमानचट्टी से ४ मील है। तीन मील सीधा और एक मील की चढ़ाई है जमुनोत्री के पंडागण यहीं रहते हैं। एक मील नीचे से रास्ता सीधा जमुना को पार करके बीफ़ गाँऊ को चला गया है। धर्मशाला श्रीमान् राजा ललिताप्रसाद जी हरप्रसाद पीलीभीत वालों की लागत १०००) रु० लेकिन अब मरम्मत के योग्य है और सदावर्त लाला दुर्गाप्रसाद जी सूरतराम खेमका देहली वालों की ओर से आटा ऽ॥= दालऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च का है।

यमनोत्री—खरसाली से ४ मील है १ मील सीधा है। आध मील की चढ़ाई फिर आध मील सीधा, एक मील की चढ़ाई और बाक़ी एक मील सीधा है। अब सड़क अच्छी बन गई है, पहिले रास्ता अच्छा नहीं था अब सेठ चांदमल जी गोयनका, नई मारकेट देहली वालों की ओर से साढ़े तेरह हजार रुपये की लागत से सड़क अच्छी तय्यार हो गई है। जमुनोत्री में खौलते हुए गरम जल के सोते हैं, जिनमें चावल, रोटी आदि सभी पदार्थ उचित समय पर सिद्ध हो जाते हैं, जमुना जी का मन्दिर है। यह स्थान समुद्र की सतह से १००००) फ़ीट की ऊंचाई पर है। यहां धर्मशाला श्रीमान् चुनू भाई माधोलाल जी अहमदाबाद निवासी की लागत ५००) रु० की है। और दूसरी धर्मशाला मुरादाबाद निवासी लाला रघुनन्दन जी की है, यहां से यात्री दर्शन कर फिर उसी मार्ग से १५ मील सिमली चट्टी तक वापिस आते हैं।

सिंगोट—सिमली से ७॥ मील है। यमनोत्री से वापिस सिमली तक पूर्व कथित मार्ग से ही आकर यहाँ से आगे एक नई सड़क होकर उत्तरकाशी गङ्गोत्री वाली सड़क में जा मिलती है। जिसका वर्णन इस प्रकार से है कि:—पहिले डेढ़ मील तक सीधा मार्ग है तब १॥ मील की चढ़ाई है फिर आध मील सीधा है और तब आध मीलकी चढ़ाई चढ़कर "फल्ला की धार" मिलती है। यहाँ से आगे ३॥ (साढ़े तीन) मील सिंगोट तक उतार है। स्थान अच्छा है अनाज का भाव भी अच्छा है।

नाकोरी—सिंगोट से ३॥ मील है एक मील सीधा मार्ग है। २॥ मील की साधारण उतार है। नाकोरी से गङ्गोत्री ६२ मील और टिहरी ३८ मील है।

धरासू—यहां तक तो पहिले वर्णन कर आये हैं। यहां से आगे एक मार्ग यमुनोत्री को और दूसरा मार्ग सीधे गङ्गोत्री को निम्नलिखित रीति से चला गया है। मार्ग सीधा है और घने जङ्गल से होकर जाता है अतः मनोरञ्जक है। यहां धर्मशाला श्रीमान् खेतसीदास हरसुखराय की लागत ५००) रु० श्रीमान् मुलतानचन्द नागरमल लोहया की लागत २५०) और धर्मशाला माई रतनी व सूर्यमल रूइयाँ की लागत १६००) रु० है।

उत्तरकाशी—नाकोरी से ६ मील। यह परम पुनीत, सुप्रसिद्ध और प्राचीन स्थान है। यहां पर बहुत से पुराने मन्दिर हैं, जिनमें से कि श्रीविश्वनाथ जी का मन्दिर, देवासुर संग्राम के समय की छूटी हुई शक्ति विशेष दर्शनीय है और श्री १०८ महाराजा साहेब जैपुर का बनाया हुआ एकादश रुद्र का मन्दिर अत्यन्त

मनोहर है। यहां क्षेत्र बाबा जी महाराज़ के रियासत के अन्दर की धर्मशाला व क्षेत्रों का केन्द्रस्थान है। यह स्थान दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। मणिकर्णिका घाट एक तो श्रीमान् गणपतखेमको चुरू निवासी ने बनाया था, लागत २०००) रु० वह बहगया। दूसरा श्रीमान् रायबहादुर भगवानदास बागला की धर्मपत्नी श्रीमती सेठानी जी ने बनवाया है लागत ४०००) रु० पञ्चायती क्षेत्र बम्बई के खेतसीदास जी हरसुख राय की सहायता से चलता है।

श्रीमान् रूपलालजी चिम्मनलाल मित्री चुरू निवासीका सदावर्त है, परमहंसों को भोजन रोज मिलता है और सदावर्त लेने वालों को आटा ऽ॥ दाल ऽ घी तो० १ नमक मिर्च दिया जाता है। श्रीमान् गोपीराम जी तापडिया रतनगढ़ निवासी का भोजन २० मूर्ति का जाड़े में और १० मूर्ति का गरमी में और श्रीमान् की धर्मशाला भी लागत १५००) की है और धर्मशाला श्रीमान् खेतसीदास हरमुखराय की लागत १८००) श्रीमान् लाला दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की लागत ३०००) रु० श्रीमान् यमुनादास जीतमल पोद्दार की लागत २५००) और श्रीमान् रामनिरञ्जन बद्रीदास की लागत ८००) रु० धर्मशाला बाई रामसुन्दरी सेठ बिहारीलाल बंका की पुत्री ने १०००) रु० से बनवाई श्रीमान् लक्ष्मीचन्द बैजनाथ खेमका की लागत १२००) रु० और आप का आयुर्वेदिक औषधालय भी है। श्रीमान् सज्जनानन्द ब्रह्मचारी जी का अन्नक्षेत्र है और श्रीमान् राजाराम जी ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से जयपुर की बड़ी महारानी राठौरजी का मन्दिर है और पांच मूर्ति का भोजन है और १ माह के लिये महाराजा पटियाला का

सदावर्त रहता है और श्रीमान केदारमल लडिया की धर्मशाला है। और मन्वतरद से पूर्व की काशी के सदृश है केदारखण्ड में लिखा है कि मुक्तिदाता यही काशी है, यहां पर बहुत महात्मागण निवास करते हैं।

गङ्गोरी—उत्तरकाशी से २ मील है यहां पर डोडीताल से निकली हुई असीगङ्गा भागीरथी जी में मिलती है। एक मार्ग सुप्रसिद्ध ताल " डोडीताल " की क़रीब १६-१७ मील जाता है। ७ मील तक तो मार्ग बना हुआ है लेकिन आगे अभी बनाये जाने को है। २ मील के घेरे का यह ताल बर्फ़ानी पहाड़ों के शृङ्गों के बीच एक रमणीक मैदान में है इसका दृश्य बड़ा ही दिव्य और मनोरञ्जक है।

नैताला—गङ्गोरी से ३ मील है। मार्ग गङ्गा के किनारे २ सीधा चला गया है।

मनेरी—नैताला से ४ मील है। मार्ग गङ्गा के किनारे २ जाता है। यहां धर्मशाला श्रीमान जीतमल यमुनादास नागपुरवाले की लागत ८०८) रु० और श्रीमान् मुलतानचन्द नागरमलजी की लागत २५०। रु० और सेठ मनसुखराय जी रामदयाल दलसुखराय जी नेवटिया की लागत ४०००) रु० की है।

कुम्हाल्टी—मनेरी से ४ मील है। मार्ग अच्छा है।

मल्ला चट्टी—कुम्हाल्टी से २ मील है। मार्ग अच्छा है। गङ्गोत्री से वापिस आकर इसी चट्टी से एक मार्ग बूढ़ाकेदार होकर केदारनाथ जी को जाता है।

भटवाड़ी—(भास्कर प्रयाग) मल्ला चट्टी से २ मील है। मार्ग सीधा है, चौकीदार के पास अपना फिजूल सामान रसीद लेकर छोड़ दीजिये गङ्गोत्री से लौट कर फिर ले लीजिये। यहां पर एक पोष्टआफिस की जरूरत है यहां धर्मशाला श्रीमान् हर्षा-मलजी सुखदेवदास की लागत २१००) रु० की है और इन्दौर नरेश की धर्मशाला भी है। और सदावर्त आटा ऽ॥ १ तो० नमक का सेठ इन्द्रमल विश्वम्भर सहाय कबाड़ी मेरठ वालोंकी ओर से हैं और औषधालय सेठ मुकुटविहारीलाल जी मदनस्वरूप मुरादाबाद वालों की ओर से खुलने वाला है।

भुक्की—भटवाड़ी से ६ मील है। मार्ग सीधा है बीच में एक मील सड़क कच्ची है। इसको सदाके लिये ठीक करना बड़ा ज़रूरी है। इस स्थान पर एक पुल भी है जिसको कि लोहे का (पक्का) बनाया जाना अत्यावश्यक है। यहां से आगे २२ मील सड़क मरम्मत किये जाने को है और जितने कच्चे पुल हैं उनका भी इसी प्रकार बनाया जाना परमावश्यक है। यहां धर्मशाला श्रीमान बद्रीदास पटवारी की है।

गङ्गनानी—भुक्की से ३ मील है। मार्ग में आध मील पर एक छोटी नदी "दीना" का पुल है। बाद को उससे आगे १ मील पर कूला नदी का पुल है। और अन्त में फिर गङ्गा जी का पुल है। पुल के इस पारही मार्गसे कुछ ऊपर गर्म जल का सोता है जो कि "ऋषिकुण्ड" कहलाता है। यह एक पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां स्नान करने के लिए कुण्ड पहिले गंगाविष्णु जी की माता ने बनवाये थे और उनके बहजाने से उनको फिर

क्षेत्र ने बनवाया। यहां से आगे मार्ग मौतदिल (न गर्म न ठण्डा) है। यहां श्रीमान् राजाराम ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से धर्मशाला व सदावर्त श्रीमान् राजा ललिताप्रसाद हरिप्रसाद पीलीभीत वालों की ओर से है। २॥ मील सड़क और धर्मशाला श्रीसज्जनानन्द ब्रह्मचारी जी ने बनवाई है।

लोहारीनाग--गंगनानी से ४ मील है। मार्ग कुछ पथरी-ला तथा मामूली चढ़ाव उतार का है। गंगनानी से एक मील पर दनगल का पुल और यहां से दो मील पर डबराणी का पुल है। (यह दोनों पुल भागीरथी पर ही हैं) यहां सज्जनानन्द ब्रह्मचारी जी की धर्मशाला है किन्तु मरम्मत के योग्य है।

सोनगङ्गा--लोहारीनाग से १ मील है। यहां पर एक छोटी कच्ची चट्टी है।

सुक्खी--सोनगङ्गा से ४ मील है। मार्ग चढ़ाई का है। यहां धर्मशाला चिरों छोटेलाल खेमका देहली निवासी की माता ने बनवाई लागत १४००) रु० और सदावर्त श्रीमान् छोटेलाल जी खेमका देहली निवासी की माता जी की ओर से आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तो० और नमक का है।

झाला--सुक्खी से ३ मील है। एक मील की चढ़ाई है, बाकी दो मील का उतार और सीधा है। यहां धर्मशाला पञ्चाय-ती क्षेत्र की ओर से लागत १५०) रु० और सेठ जवाहरमल जी बृजमल खेमका की धर्मशाला लागत ११००) रु० यहां और भी धर्मशालाओं की आवश्यकता है।

हर्सिल—(हरिप्रयाग) झाला से २ मील है। आध मील पर श्यामप्रयाग (श्यामगङ्गा और भागीरथी का संगम) है यहां पर गङ्गा जी के प्रवाह का समभूमि में भिन्न २ धाराओं में (देश की तरह) बहने का चित्ताकर्षक अत्यन्त अद्भुत दृश्य है यह स्थान समुद्र की सतह से ६००० फ़ीट से अधिक ऊंचाई पर है, यहां पहुंचते ही मालूम पड़ता है, कि किसी दिव्यलोक में पहुँच गये हैं। श्यामप्रयाग से पौन दो मील आगे गुप्तप्रयाग और गुप्त प्रयाग से आधमील पर हरिप्रयाग है। यहां धर्मशाला श्रीमान् दन्तजाट की है और सदावर्त तथा मंदिर श्रीलक्ष्मीनारायण जी का राजाराम ब्रह्मचारी का है। जङ्गलात का बङ्गला है, सेवों का बाग़ भी है। यहाँ पर ऊनी वस्त्रः--कौट्ट, थुलमा, दन, पश्मीना, आदि बिकते हैं।

अणियां पुल—हार्सिल से आध मील है। यहां पर पुल (भागीरथी पर है).यहां एक छोटी चट्टी भी है।

धराली—पुल से २ मील है। मार्ग सीधा है। यहाँ धरियाल लोग बसते हैं जो कि तिब्बत के साथ नेलङ्ग घाटी से होकर व्योपार करते हैं। इस मार्ग से कैलाश, और मानसरोवर जाने वालों को इन्हें साथ में ले जाना चाहिये। धराली के आस पास साधुओं की कुटियां बहुत हैं और बडे अच्छे २ प्रसिद्ध महात्मा उनमें निवास करते हैं। यहां पर धर्मशाला श्रीमती राणी साहिबा जैपुर वालों की ओर से है और सदावर्त श्रीमान सेठ जेठालाल जी जैभाई निकोरा निवासी की ओर से आटा ऽ॥ दालऽ घी १ तो० नमक और मिर्च का है। यहां पर श्रीकण्ठ से दूध गंगा आई है संगम पर महादेव जी का मन्दिर है।

पार में गङ्गा जी के दूसरी तरफ मुखवा मठ है यहां गंगोत्री जी के पण्डागण रहते हैं ।

यहां से १ मील पर मारकण्डे जी का स्थान है यहां शरद ऋतु से ६ मास तक श्रीगंगा जी की पूजा होती है, यहां पर भण्डार श्रीमान चुन्नीभाई माधवलाल जी ने बनवाया है लागत ६००)

जांगला—धराली से ४ मील है यहां काठ का सरकारी बंगला है। मार्ग अच्छा सीधा और मनोरञ्जक है।यहां से डेढ़ मील आगे से एक़ रास्ता नेलङ्गघाटी होकर तिब्बत को जाता है।

भैरोंघाटी—जांगला से २॥ मील है। डेढ़ मील सीधा है, एक मील की चढ़ाई है। यहां गन्धक का पहाड़ है इस लिये जमीन सदा ही गरम रहती है। स्थान रमणीक है देवदार का घना जंगल है यहां पानी के नल की बड़ी आवश्यकता है।

यहां श्रीमान् रघुनाथप्रताप मथुरादास की धर्मशाला लागत १००) रु० और धर्मशाला पीलीभीत वालों की गिर जाने से माई भागीरथी माता मेमराज जी रूइयां व हरनन्द राय घनश्याम दास बम्बई वालों की तरफ से लागत २०००) रु० की नई बनी हैं और एक पुरानी धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की है॥

एक मीलपर भैरोंजी का मन्दिर है,धर्मशाला श्रीमान् लाला जौहरीमल देहली वालों की लागत ३००) रु० जल का नल श्रीमान् मथुरादास सुरेका का है लागत ३००) रु०, माई दुर्गा कानपुर वाली के २०००) रु० के व्याज से नल तथा कुंड और प्याऊ में पानी मिलता है और धर्मशाला श्रीमान् पीलीभीत वाले

की जिस पर क्षेत्र की ओर से टीन लगाने का प्रबन्ध हो रहा है सदावर्त सेठ अमृतलाल दामोदरदास जी सांकरी सेरी अहमदाबाद वालों की ओर स आटा ऽ॥= दाल ऽ= घृत १ तोला और नमक मिर्च का है।

गङ्गोत्री—भैरांघाटीसे ६॥ मील है। भैरोंघाटी के नीचे मार्ग नया बनने के कारण एक मील और बढ़ गया है और सारी दूरी हरिद्वार से अब १९३ मील हो गई है, यद्यपि श्रीभागीरथी जी का मुख्य उद्गम स्थान (गौमुख) अभी १८ मील और आगे है तथापि उसके अत्यन्त दुर्गम होने के कारण यात्रीगण अपनी मनोकामना यहीं पर पा जाते हैं और दर्शन स्पर्शन, स्नानादि करने से तृप्त और कृतकृत्य होकर यहीं से गङ्गाजल भर लेआते हैं। स्थान कुछ दूरतक सम है। देवदार का घना जङ्गल है। पुरी से कुछ नीचे केदार गङ्गा का सङ्गम है। और वहां से एक फलांङ्ग नीचे बड़ी ऊंचाई से गङ्गा जी शिवजी के लिङ्गके ऊपर गिरती है यहां पर श्रीजैपुर महाराज द्वारा निर्मित श्रीगङ्गा जी का एक विशाल मन्दिर है। श्रीमहाराजा साहेब की ओर से यात्रा समय में अन्न क्षेत्र भी खुलता है। राजा भगीरथ जी ने पतित पावन कलिकलुषनशावन परम पुनीत गङ्गा जी को अपने तपोबल से प्रगट कर जगतका उद्धार तथा महान उपकार किया है।

सदावर्त श्रीमान् सेठ महालीराम जी लछमनदास खुर्जा निवासी की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= या आलू ऽ= घी १ तो० नमक मिर्च गुड़ १ छटांक और चाय ६ माशे मिलता है। तीन धर्मशालाएं पञ्चायती, लागत प्रत्येक की १०००) रु० है। घाट एकतो श्रीमान् चुन्नीभाई माधोलाल, अहमदाबाद, लागत २०००)

६

रु० है। यह घाट बर्षांत में गङ्गा जी ने बहा दिया दूसरा घाट राय बहादुर भगवानदास जी बागला की धर्मपत्नी ने बनवाया लागत २०००) एक धर्मशाला श्रीमान् चुन्नू भाई माधोलाल की लागत ५००) दो धर्मशाला रायबहादुर भगवानदास जी बागला की धर्म-पत्नी ने बनवाई लागत १०००) रु० और नीचे लिखे छोटे २ मकान बहुत हैं जोकि सज्जन श्रीमानों ने बनवाये हैं । श्रीमान् जुहारमल जी रामेश्वर चुरू वालों की धर्मशाला २१०) रु० श्रीमान् पूर्णमलजी मुंगेर वालों की लागत १२५) रु० श्रीमान् रघुनाथ प्रताप जी राठी मुकाम कण्डोली मुल्क बगर लागत १२५) रु० श्रीमती माई सुन्दरी की लागत २५) रु० श्रीमान् मङ्गलदास जी नारनौल वालों की लागत १५) श्रीमान् नानूराम लक्ष्मीनारायण जी की लागत १५) रु० श्रीमान् छोटेलाल जी अहमदाबाद वालों की लागत २५) रु० श्रीमती माई महालक्ष्मी जी अहमदाबाद वाली की लागत १०) रु० श्रीमान् सीताराम जी दीक्षित नागपुर वालों की लागत २००) रु० श्रीमान् रामराव जी बलवन्त राव मुकाम पोपलाद जिला निमाड़ वालों की लागत १०) रु० श्रीमान् लक्ष्मणदास जी बिहारी लाल अमृतसर वालों की २५०) रु० श्रीमान् रघुनाथ प्रताप जी की गुफा लागत १५) धर्मशाला श्रीमती माई भागीरथी माता खेमराज रूइयां हरनन्दराय घनश्यामदास बम्बई वालों की लागत १५००)रु०

यमनोत्री-गङ्गोत्री यात्रा मार्ग नं० २

(ऋषिकेश से देहरादून मसूरी होकर)

हरिद्वार—या ऋषिकेश से रेलमें चलकर देहरादून पहुंचते हैं । देहरादून में श्रीमान् गुरु रामराय जी की गद्दी है । महन्त प्रयागदास जी के चेले श्रीमान् महन्त लक्ष्मणदास जी महाराज सम्वत् १९५४ से गद्दी पर विराजमान हैं । आप सरल हृदय-सुशील, धर्मनिष्ठ, सत्यव्रती तथा अतिथि सेवी है । आप स्वयं सर्वगुणसम्पन्न तथा गुणग्राहक हैं।

देहरादून में बाबा जी महाराज के क्षेत्र की ओर से एक औषधालय और एक प्याऊ रहती है ।

राजपुर—देहरादून से ७ मील है । यहां भी झम्पान, डण्डी, घोड़ा इत्यादि सब प्रकार की सवारी मिलती है। बावड़ी के किनारे मकान रहने के लिये बहुत अच्छा है । यहां धर्मशाला की आवश्यकता है, बावड़ी पर यात्रियों के आराम के लिये बर्तन भी रक्खे रहते हैं । यहां से ७ मील की चढ़ाई शुरू होती है ।

राजपुर से—१ मील पर टोल घर है ।

टोल से—२॥ मील जड़ीपानी है ।

जड़ीपानी से—१ मील वालूगंज ।

बालूगंज से--२॥ मील मसूरी। यहां एक मन्दिर है। सज्जन श्रीमानों की ओर से अतिथियों को अन्न मिलता है । यहां गर्मी की मौसम में सज्जन श्रीमान् निवास करते हैं । यहां एक सर्कारी छावनी है। शर्दी अच्छी रहती है।

जबरखेत-- मसूरी से एक मील है। मार्ग सीधा है।

सुवाखोली--जबरखेत से ५ मील है। यहां से दो रास्ते सड़क के और एक बटिया का उत्तरकाशी को जाते हैं बटियावाले रास्ते में धर्मशाला एक फेडी मे श्रीमान् रामनाथ जी फकीरचन्द सहारनपुर वालों की है। लागत २००) रु० अब गिर गई है टीन और बर्तन बचे हुए हैं। एक धर्मशाला **भवान** में श्रीमान् रामदास गोकुलदास खारे वाले की बनी है लागत ३००) रु० । यह धर्मशाला मरम्मत के योग्य हो गई है । एक धर्मशाला **लालूरी** में पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से है।

एक सड़क बांये हाथ को मौजा थत्यूड़ा होकर सीधे धरासू को और एक सडक झालकी, कानाताल होकर सीधी टिहरी को या भलियाना होकर उत्तरकाशी को जाती है जिसका वर्णन नीचे लिखे भांति है:-

(१) सुवाखोली से थत्यूड़ा होकर सीधे धरासूः-

थत्यूड़ा--सुवाखोली से ६ मील है । पहिले उतार है, सड़क अच्छी है । यह मार्ग अन्य मार्गों से अधिक निकट है ।

मोलधार--थत्यूड़ा से ५ मील है मार्ग सीधा और रमणीक है। विशेषतः सुबह को सारा मार्ग छायादार रहता है। यहां से आगे तीन मील की चढ़ाई घोड्चापा धार तक चली गई है और फिर यहां से ४ मील का उतार है।

अंधियारी--मोलधार से ७ मील है। मार्ग चढ़ाई उतार का है। टिकने के लिये स्थान गावों में मिल जाता है। खाने पीने की वस्तुएँ भी कीमत पर इन्हीं गांव वालों से मिल जाती हैं।

चापड़ा--अंधियारी से १ मील है। यहां पर एक बँगला है।

त्याड़ चट्टी--चापड़ा से ६ मील है। दो मील उतार और ४ मील की चढ़ाई है यहां से आगे ६॥ मील का उतार है।

धरासू--चापड़ा से ७ मील है। ६॥ मील पर गङ्गोत्री की सड़क मिलती है और आध मील आगे धरासू है।

गङ्गोत्री--धरासू से ७५ मील है, जिसका वर्णन पृष्ठ ७० से ८१ तक किया गया है।

(२) सुवाखोली से कानाताल भल्डियाना होकर धरासू।

झालकी--सुवाखोली से १ मील है। यहां धर्मशाला श्रीमान महन्त लक्ष्मणदास जी देहरादून वालों की है। यहां पानी के वास्ते महन्त जी की ओर से नल लगाने का विचार है यहां पर और भी धर्मशालाओं की आवश्यकता है।

धनोल्टी--झालकी से ८ मील है । धर्मशाला श्रीमान् लाला दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की है । लागत २३००) रु० । गिर जाने पर उन्होंने दुबारा बनवाई लागत १७००) रुपया । पानी का नल भीमराज रुइयां जी की माता माई भागीरथी की ओर से लग गया है । लागत २१००) रु० और सदावर्त सेठ जीवनलाल चुन्नीलाल जी चिनाई वाले हाल अहमदाबाद निवासी की ओर से आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी एक तोला और नमक मिर्च का है ।

कानाताल--धनोल्टी से ८ मील है । यहां धर्मशाला श्रीमान ईश्वरदास जी. धर्मचन्द सिंघानियां की है । लागत २४००) रु० इन्हीं की ओर से सदावर्त में आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ या आलू ऽ। घी १ तो० और नमक मिर्च दिया जाता है । खच्चरों के वास्ते मकान बनाने की तजवीज हो रही है । यहां एक प्याऊ भी है । और एक धर्मशाला श्रीमान् शिवदत्त कोतवाल जी की है, यह एक अच्छी ठण्डी जगह है ।

आगे १ मील पर दो सड़कें हो गई हैं एक तो सीधी भलिडयाना होकर उत्तरकाशी-गङ्गोत्री को गई है और दूसरी टिहरी को । दोनों रास्तों में उतराई शुरू होती है यहां से टिहरी १४ मील है ।

दूसरे मार्ग से भलिडयाना ८ मील है । पहिले ४ मील बन्डवाल गांव है यहां पर धर्मशाला ला० चणंदास जी भगवानपुर वालों की है यहां पानी कमती है नल द्वारा पानी लाने की जरूरत है । भलिडयाना यहां से ४ मील है ।

यमुनोत्री-गंगोत्री यात्रा मार्ग नं० ३
(ऋषिकेश--नरेन्द्रनगर--टिहरी होकर)

एक रास्ता ऋषिकेश से नरेन्द्रनगर होकर टिहरी को नीचे लिखे भांति जाता है किन्तु यात्रीगण इससे नहीं जाते हैं।

नरेन्द्रनगर--ऋषिकेश से १० मील है। यहां अब मोटर की सड़क चली गई है यह रियासत टिहरी गढ़वाल की नवीन राजधानी है। पैदल सड़क ५ मील है।

फकोट--नरेन्द्रनगर से १० मील है। मार्ग सीधा है, यहां एक डाक बंगला है।

नागणी--फकोट से १० मील है। ५ मील का उतार और बाकी सीधा है। मार्ग मनोरञ्जक है, एक डाकबंगला है।

चमुआ--नागणी से ११ मील है। २ मील सीधा बाकी साधारण चढ़ाई है यहां से एक मार्ग करीब १२ मील भल्डियाना को चला गया है।

टिहरी--चमुआ से १० मील है। ८ मील की मामूली उतार, बाकी सीधा है। यहां से आगे के मार्ग का वर्णन पृष्ठ २९ पर देखो।

गङ्गोत्री--टिहरी से १०० मील है।

गङ्गोत्री से केदारनाथ १२३ मील है ।

गङ्गोत्री से—मल्ला चट्टी (४० मील) तक पूर्व कथित मार्ग से ही लौटते हैं, आगे कुछ कठिन मार्ग से चलना पड़ता है इस मार्ग को शीघ्र बनवाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सौराकी गाड--(स्याली) मल्ला से २ मील है। मार्ग सीधा है किन्तु मरम्मत के योग्य है। यहां धर्मशाला श्रीमान् सेठ रामस्वरूप जी जगन्नाथ पीलीभीत वालों की है, उन्हीं का सदावर्त भी है सदावर्तमें आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घृत १ तोला दिया जाता है।

फयालू--स्याली से २ मील है, मार्ग कठिन चढ़ाई है।

छूंणाचट्टी—फयालू से ३ मील है, एक मील चढ़ाई और २ मील सीधा है। धर्मशाला गोकलचन्द जी कानूनगोय की है।

बेलक—छूणा से ४ मील है। चढ़ाई कठिन है।

पङ्गराना—बेलक से ५ मील है। उतार तेज है।

झाला—पंगराना से ४ मील है। २ मील उतार चलकर पाव मील की चढ़ाई है तब सीधा चला गया है अन्त में डेढ़ मील का बड़ा उतार है, धर्मशाला की बडी जरूरत है,

धरम गङ्गा पर एक पक्का पुल भी बनाने का है। यहां से आगे मार्ग सीधा चला गया है।

बूढ़ाकेदार—झाला से ५ मील है। ३ मील पर अंगूडा गाऊँ मिलता है और वहां से २ मीलपर बूढ़ाकेदार है यहां शिव जी का मन्दिर है। धर्मशाला रायबहादुर साहू जगन्नाथ पीलीभीत वालों की लागत १८००) रु० सदावर्त इन्हीं श्रीमानों की ओरसे आटा ऽ॥≈ दाल ऽ≈ घृत १ तोला और नमक का है। यहां एक पोष्टआफ़िसकी बड़ी जरूरत है।

तोलाचट्टी—बूढ़ाकेदारसे ४ मील है। कुछ चढ़ाई है बाकी सीधा है। इसे मालदा या मोलधार भी कहते हैं।

भैरोंचट्टी—तोला चट्टी से ३ मील है। यहां भैरव जी का मन्दिर है, हनुमान जी के भी दर्शन हैं, मार्ग चढ़ाई का है।

भौंटाचट्टी—भैरोंचट्टी से दो मील है। आध मील की साधारण चढ़ाई है।

घुत्तूचट्टी—भौंटाचट्टी से ७ मील है। मार्ग चढ़ाव उतार का है। यह भिलङ्गना नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहां सदावर्त श्रीमान् सेठ रामरिखदास जी महादेवलाल नथमल कलकत्ता वालों की ओर से आटा ऽ॥ और नमक का है, धर्मशाला क्षेत्रकी प्रेरणा से एक गुप्त श्रीमान् जी की है। यहां रघुनाथजी का मन्दिर भी है। आगे मार्ग चढ़ाईका है।

गवनाचट्टी- घुत्तू से १ मील है।

गौमांडा—गवना से ३ मील है। रास्ता चढ़ाई का है।

दुफन्दा—गौमांडा से ३ मील है । मार्ग चढ़ाई का है ।

पंवाली—दुफन्दा से ३ मील है । यहां धर्मशाला रामनारायण जी लक्ष्मीनारायण प्रतापगढ़वालों की ओर से बनी है लागत १५००) रु० सदावर्त सेठ भगवानदास गोकुलदास बम्बई निवासी की ओर से आटा ऽ॥ और नमक का है । दवाईखाना पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से है यहां दवाई मुफ्त दी जाती है । घुत्तू और पंवाली के दर्मियान श्रीमान् से० मुकुटविहारीलाल जी मुरादाबाद निवासी की ओरसे यात्राकालमें प्याऊ लगती है लागत १००) रु० और गैना चट्टी में प्याऊ सेठ दुर्गाप्रसादजी झब्बालाल दिल्ली वालों की ओरसे लगती है ।

मग्गूचट्टी—पँवाली से १० मील है । पहिले पँवाली से ४ मील तक मार्ग बर्फ़ पर से होकर चलता है । कारण कि यह जगह ११००० फुटकी उँचाई की है । बाकी ६ मील मार्ग सुगम है । यहां धर्मशाला सेठ जेठाजी वूलजी की ओर से बनी है लागत १०००) और एक धर्मशाला श्रीमान् सेठ इरदत्तराय जी नन्दलाल लोहला रंगून वालों की लागत १२००) रु० । सदावर्त एक गुप्त श्रीमान् दिल्ली वालों का आटा ऽ॥~ दाल ऽ~ घी १ तोला और नमक मिर्च का है ।

त्रियुगीनारायण—५ मील । यहां बड़ी सड़क आ मिली है जो ऋषिकेश से सीधी केदारनाथको गई है । यहां बाबा जी की धर्मशाला और क्षेत्र है । आगे के मार्ग का वर्णन पहले कर चुके हैं ।

शुभमिति ।

चट्टियोंकी दूरी।

नाम चट्टी	मील व फर्लांग	नाम चट्टी	मील व फर्लांग
हरिद्वारसे बद्रीनाथ } ...	१८३/५	छालड़ी ...	३
सत्यनारायण ...	८	उमरासू ...	२/२
ऋषिकेश ...	७	सौड़ ...	२/४
मुनीकीरेती ...	१/४	देवप्रयाग ...	१/२ ——— ५८
लक्ष्मणझूला ...	१/४	विद्याकोटी ...	४
गरुड़चट्टी ...	२	सीताकोटी ...	२
गुलरचट्टी ...	४	रानीबाग ...	१/४
महादेवसैंण ...	२	कोल्टा ...	१/४
नाईमोहन {	१ ——— २६	रामपुर ...	२/२
छोटी बिजनी ...	२	अरकणी ...	३
बड़ी बिजनी ...	१	बिल्केदार ...	२
न्योडखाल ...	१	श्रीनगर ...	३ ——— ७७
कुण्ड चट्टी ...	२	सुकृता ...	५
बन्दरभेल ...	३	भट्टीसेरा ...	२/४
महादेव सैंण ...	२/७	छांतीखाल ...	१
सेमल चट्टी ...	४/१	खांकरा ...	२/४
कांडी ...	३	नरकोटा ...	२/४
व्यासघाट ...	४	पञ्चभाईकी चढ़ाई { ...	१/२ ——— ९१/६

नाम चट्टी		मील व फर्लांग
गुलाबराय	...	२/२
रुद्रप्रयाग	...	१/२ ९५/२
शिवानन्दी	...	७/६
कमेड़ा	...	४/१
गोचर	...	२/४
चटुआपीपल	...	२
करणप्रयाग	...	३/७ ११५/४
उमट्टा	...	२/२
जैकण्डी	...	२/२
लङ्गासू	...	१/६
सोनला	...	४
नन्दप्रयाग	...	२/७
मैठाणा	...	३
कोहेड़	...	१/७
चमोली		२ १३५/४
मठ	...	२
छिनका	...	१/५
बावला	...	२
सियासैंण	...	१/१
हाट	...	१

नाम चट्टी		मील व फर्लांग
पीपलकोटी	...	२
गरुड़गङ्गा	...	२/४
टंगनी	...	१/४
पातालगङ्गा	...	३/१
गुलाबकोटी	...	२
हेलङ्ग (कुम्हार चट्टी)	...	२
खनेटी	...	२/२
झडकूला	...	१/२
सिंहधारा	...	२/१
ज्योतिर्मठ		१/१ १६४/१
विष्णुप्रयाग	...	१/६
घाट	...	४/१
पाण्डुकेश्वर	...	२/६
शेषधारा	...	०/५
लामबगड़	...	२/४
हनुमानचट्टी	...	२/६
बद्रीनाथ		३/८ १८३/५

हरिद्वारसे केदारनाथ १४९

हरिद्वार से रुद्रप्रयाग ... ९५/१

रुद्रप्रयाग से छतोली ... ५

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
मठ	... १
रामपुर	... १
अगस्तमुनि	... ४/४
सौड़ी	... २
चन्द्रापुरी	... २
भीरी	... २/४
कुण्ड	... ३/४
गुप्तकाशी	... २/४ ; ११९
नाला चट्टी	... १/४
नारायणकोटी	... २
व्योंग मल्ला	... १/४
मैखण्डा	... २
फाटा	... २
रामपुर	... ३
त्रिजुगीनारायण	... ४/६
सोमद्वारा	... ३/२
गौरीकुण्ड	... ३
रामबाड़ा	... ४

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
केदारनाथ	... २ ; १४९
केदारनाथ से बद्रीनाथ	१०१
केदार से नाला चट्टी	१९
ऊखीमठ	... ३
गणेश चट्टी	... २/४
पोथीवासा	... ५
वनियाकुण्ड	... २
चोपता	... १
तुङ्गनाथ	... ३
जङ्गल चट्टी	... ३
पांगरवासा	... २/४
मण्डल चट्टी	... ४
गोपेश्वर	... ४/४
चमोली	... २
बद्रीनाथ	... ४८ ; १०१

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
हरिद्वार से देवप्रयाग होकर यमनोत्री	१६६
ह० से देवप्रयाग	... ५८
देवप्रयागसे खर्साड़ा	... १०
कोटेश्वर	... ४
बन्द्रया	... ६
क्यारी	... ८
टिहरी	... ६ / ९२
सराई	... ५/४
मल्डियाना	... ६
छाम	... ५
नगूण	... ५
धरासू	... ५
कल्याणी	... ४
गेउंला	... ५
सिलक्यारी	... ५
राडीधार	... ५
डंडाळगांऊ	... २
सिमली	... २
गङ्गाणी	... २

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
यमुनाचट्टी	... ६
ओजरी चट्टी	... ६
डडोटी	... २/४
रानागांऊ	... २
हनुमानचट्टी	... २
खरसाली	... ४
यमनोत्री	... ४ / १६६
यमनोत्री से गङ्गोत्री	... ९८
यम० से सिमली	... २५
सिंगोट	... ७/४
नाकोरी	... ३/४
उत्तरकाशी	... ६
यम० से उत्तर०	... ४२
हरि० से उत्त०	... १३६/४
गङ्गोरी	... ३
नैताला	... ३
मनेरी	... ४
कुम्हाल्टी	... ४
मल्लाचट्टी	... २
भटवाड़ी	... २
भुक्की	... ६
गंगनानी	... ३

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
लोहारीनाग	... ४
सुक्खी	... ५
झाला	... ३
हर्सिल	... २
धराली	... २४
जांगला	... ४
भरोंघाटी	... २/४
भै० से गङ्गोत्तरी	... ६/४
यमनोत्री से गंगोत्री	... ९८
हरिद्वार से गङ्गोत्री	...१९३
गङ्गोत्री से केदारनाथ	...१२१/२
गङ्गोत्री से मल्ला	... ४०
मल्ला से स्याली	... ३
फ्याल्रू	... ३
चूणा	... ३
वेलक	... ४
पंगराणा	... ५
झाला	... ४
बूढ़ाकेदार	... ५
तोलाचट्टी	... ४
भैरव चट्टी	... ३

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
भौंटा	... २
घुत्तूचट्टी	... ७
गौमांडा	... ४
दुफन्दा	... ३
प्वांली	... ३
मग्गू	... १०
त्रियुगीनारायण	... ५
केदारनाथ	१३/२ / २१/२

वापसी यात्रा ।

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
बद्रीनाथ से करण प्रयाग	... ६८
क०प्र० से ऋषिकेश	... १००
क०से रामनगर	... ९८/४
क० प्र० से सिमली	... ४
सिरौली	... २
भटोली	... १/४
आदबदरी	... ४
खेती	... ३/२
जांकापानी	... १/४
दिवालीखाल	... २

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
ग्वाड़ गधेरा	... ४/४
धुनारघाट	... १/२
मेलचौंरी	{ ५ / २९
गणांई	... ९/४
त्याड़	... ४/४
मासी	... २/६
वृद्धकेदार	... ४
मिकियासैंण	... २
श्रीकोट	... ३
बासोट	... २

नाम चट्टी	मील व फर्लाङ्ग
ग्वालखान	... ३/६
गूजरघाटी	... २
मछोड़	... २
पनवाद्योखन	... २
गोदी	... २
टोटाआम	... ६
सौराल	... २
कुमरिया	... २
मोहन	... २
गरजिया	... ५
रामनगर	} ८ / ९८/४

बद्रीनाथ लैन में।

तारघर व डाकघर

हरिद्वार
ऋषिकेश
देवप्रयाग
श्रीनगर
रुद्रप्रयाग
करणप्रयाग
चमोली
जोशीमठ
बद्रीनाथ

सिर्फ डाकघर

व्यासघाट
भट्टीसेरा
चट्टआपीपल
नन्दप्रयाग
पीपलकोटी
हेलङ्ग

केदारनाथ लैन में

तारघर व डाकघर

गुप्तकाशी

सिर्फ डाकघर

चन्द्रापुरी
केदारनाथ

गङ्गोत्री यमनोत्री लाइन में

तारघर व डाकघर

टिहरी

सिर्फ डाकघर

धरासू
बड़कोट
उत्तरकाशी

टेलीफोन।

मुनीकी रेती-नरेन्द्रनगर-टिहरी-उत्तरकाशी।

विशेष सूचना ।

ऋषिकेश तथा उत्तराखण्ड की यात्रा लाइनों में बाबा जी के छोटे छोटे दवाईखाने होते हुए भी साधु महात्मा दीन दुखी तथा सज्जन श्रीमान यात्रीगणों के रोगग्रस्त होने पर आतुरालय व अस्पताल का मकान न होने से बिना चिकित्सा शारीरिक दुःख पाते थे और सज्जन श्रीमान यात्रीगणों को शिलाजीत इत्यादि उत्तराखण्ड की औषधियाँ मंगाने से ठीक समय पर न पहुँचने के कारण जो कष्ट उनको होता था उसको दूर करने के लिये बाबाजी ने अपने पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की लागत से आयुर्वेदिक विद्यालय औषध निर्माणशाला और देशी दवाईखाना खोलकर ८०,०००) रुपये जमा करके एक आयुर्वेदिक सेवा समिति कमेटी स्थापित कर दी कि यात्रीगण तथा दीन दुखियों के कष्ट दूरकर महात्माओं की सेवा करें और ऋषिकेश में जो बाबा जी की संस्कृत पाठशालायें व अनाथालयों में बालकों को विद्यादान दिया जाता है यदि वह आयुर्वेद विद्यालय में प्रवेश होना चाहें तो सबसे प्रथम उनको दवाई का काम सिखावें। अतएव बाबा जी के आयुर्वेदिक विद्यालमें विद्यार्थियों को आचार्यश्रेणी पर्यन्त नियमानुसार रहने पर भोजन आदि सहित आयुर्वेद की शिक्षा धर्मार्थ दी जाया करती है और आयुर्वेदिक औषधालय में सज्जन श्रीमानों को उचित मूल्य पर गरीबों को ऋषिकेश में तथा उसके आधीन के अन्य उत्तराखण्ड यात्रालाइन के दवाई खानों में इलाज कराने वालों को दवाई मुफ्त दी जाती है और रोगियों को दातव्य औषधालय के आतुरालय में रख कर इलाज मालजा मुफ्त किया जाता है।

अन्तिम निवेदन ।

प्रिय पाठक वृन्द !

पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय श्री १०८ बाबा काली कमली वाले परम हंस स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज द्वारा संस्थापित सार्वजनिक लाभदायक दातव्य संस्था—"काली कमली वाला क्षेत्र" को उनके उत्तराधिकारी पूज्य बाबा रामनाथ जी महाराज ने अपनी योग्यता से तथा सज्जन श्रीमानों की सहायता से बहुत कुछ बढ़ाकर उत्तराखण्ड के सुप्रसिद्ध तीर्थः—यमनोत्री, गङ्गोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ आदि तीर्थों को जानेवाले यात्रियों के आराम के लिये धर्मशाला औषधालय प्याऊ तथा साधु महात्माओं के लिये सदावर्त खोलने के अतिरिक्त कुम्भ अर्ध-कुम्भी के अवसर पर प्रयागराज और हरिद्वारमें और कुरुक्षेत्र के सूर्यग्रहण के मेलों में क्षेत्र की ओर से साधु महात्मा तथा अभ्यागतों के लिये लङ्गर तथा अन्नक्षेत्र खुलते हैं और यात्रियों के टिकने तथा आराम के लिये प्रबन्ध होता है। इस विशाल दातव्य संस्था का सुचारु रूप से चलता रहना तथा जन सेवा करते रहना दाता सज्जन श्रीमानों की सहायता पर निर्भर है।

जिन महानुभावों को क्षेत्र की सहायतार्थ कुछ भेजना हो वे निम्न लिखित पते पर भेजने की कृपा करें।

नोट—समस्त सज्जन श्रीमान दाता महानुभावों को सूचित किया जाता है कि **बाबा जी महाराज के क्षेत्र** ऋषिकेश की

ओर से कोई साधु महात्मा तथा कर्मचारी देश में, गांऊं २ में अथवा शहर २ में क्षेत्र के लिये मांगने को तथा दवाई बांटने व बेचने के लिये नहीं जाता है। यदि किसी को ऐसा कोई आदमी कभी किसी गांऊं या शहर में दिखाई देव तो उसे धोखेबाज समझ कर तुरन्त ही पुलिस के हवाले करवा कर बाबा जी महाराज के क्षेत्र ऋषिकेश को सूचित कर देना चाहिये।

निवेदक--

बाबा मनीराम.

पता—श्री १०८ बाबा काली कमली वाले

रामनाथ जी महाराज,

पञ्चायती क्षेत्र मु० पो० ऋषिकेश (देहरादून)